www.singaporesangam.com

सिंगापुर से निकलने वाली पहली हिन्दी पत्रिका

# सिंगापुर संगम

ISSN: 25917773

वर्ष-6, अंक 21

## त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

जनवरी-मार्च २०२३ - वर्ष-६, अंक २१

www.singaporesangam.com

# सिंगापुर संगम

*सिंगापुर से निकलने वाली पहली हिंदी पत्रिका* **ISSN: 25917773**

- वर्ष ६
- अंक २१
- जनवरी-मार्च २०२३

***सम्पादक:***

डॉ संध्या सिंह

***सहयोग:***

*आराधना झा श्रीवास्तव*

*अनमोल सिंह*
*युवराज आर्यन*

***आवरण चित्र:***

*रश्मि अहलावत*

***संपर्क:***

**Email:** sangam.singapore@gmail.com

**Facebook-** https://www.facebook.com/singapore.sangam.3 ,
**Page**- sangam Singapore संगम सिंगापुर sinagpore sangam

**Instagram:** https://www.instagram.com/**singaporesangamhindi**/?hl=en

**YouTube:** https://tinyurl.com/**singaporesangamhindi**

**Website:** www.singaporesangam.com , **Magazine-** https://www.singaporesangam.com/magazines/

***सिंगापुर***

प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं| आवश्यक नहीं कि पत्रिका के संपादक या प्रबंधन सदस्य इससे सहमत हों।
सर्वाधिकार सुरक्षित
© Singaporesangam

# सम्पादकीय

सिंगापुर से नमस्कार!

पत्रिकाएँ साहित्य जगत को दर्पण की तरह पारदर्शी रखने का प्रयास करती हैं। देश विशेष में भारतीय समुदाय या हिंदी जगत में किस प्रकार की गतिविधियाँ हो रही हैं, यह तो दिखाती ही हैं साथ ही भविष्य के लिए नींव कितनी पुख्ता है, इस पर भी ध्यान आकर्षित करवाती हैं।

आप सबके सहयोग से सिंगापुर संगम द्वारा हम सब कुछ समेटने और सामने लाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। सिंगापुर के इस अंक को एक विषय में न बाँधकर बल्कि मुक्त रखा गया है। विविध विषयों और विधाओं से सजा यह अंक आपको सिंगापुर में रचे जा रहे साहित्य और गतिविधियों से तो अवगत करवाएगा ही, साथ ही दुनिया के कुछ देशों से साहित्य की बानगी भी दिखाएगा। इस अंक के माध्यम से प्रतिष्ठित साहित्यकारों के साथ ही युवा रचनाकार अपनी रचनाओं द्वारा अपने साहित्य-संसार में आपको ले जायेंगे। सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ कि आपने समय निकालकर सिंगापुर संगम के अंक को समृद्ध किया है। भविष्य में भी इसी प्रकार का स्नेह बना रहे! इस अंक का आवरण चित्र बनाया है फीजी से रश्मि अहलावत जी ने। उन्होंने हमारी जड़ें, हमारे विकास को सृजित करती हैं जैसे विषय को केंद्र में रखकर मत्स्य आकृति से विस्तार को दिखाया है।

बीते तीन महीनों में हिंदी जगत में कई बड़े आयोजन हुए जिनमें फीजी में संपन्न हुआ १२वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन सबसे प्रमुख रहा। यह सम्मलेन सिंगापुर के लिए भी ख़ास रहा क्योंकि पहली बार सिंगापुर से किसी को विश्व हिंदी सम्मान मिला है। निजी रूप से मैं सभी का धन्यवाद सिंगापुर संगम पत्रिका के माध्यम से देना चाहूँगी। यह आप सबके प्रेम का प्रतिफल है।

अगले अंक के लिए रचनाएँ, चित्र, पेंटिग आदि आमंत्रित हैं। आपकी प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए बहुत ख़ास हैं अतः आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा!

धन्यवाद सहित

**डॉ संध्या सिंह**

# हमारी जड़ें, हमारे विकास को सृजित करती हैं

***रश्मि अहलावत***

रश्मि अहलावत मूल रूप से भारत में पश्चिमी उत्तरप्रदेश के ज़िला बिजनौर की निवासी हैं और पिछले ७ वर्षों से अपने पति और दो बेटों के साथ फीजी में रह रही हैं। रश्मि ने रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर और शिक्षा में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर रासायनिक विभाग में गुणवत्ता नियंत्रक और प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षिका के पद पर सेवाएँ प्रदान की हैं। रश्मि कला एवं चित्रकारी (विशेषकर भारतीय लोक कला) और योग में विशेष रुचि रखती हैं। रश्मि की अनेक चित्रकारी फीजी कला परिषद द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनी में प्रदर्शित हो चुकी हैं। रश्मि अनेक रंगोली प्रतियोगिताओं में विजेता रही हैं और योग के क्षेत्र में भी विजेता बनकर रश्मि ने भारत सरकार से सम्मान प्राप्त किये हैं।

# इस अंक में



| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| संयुक्त अरब अमीरात | कविता | एक उगता दिन गली में, छूटा हुआ घर | पूर्णिमा बर्मन | 5 |
| भारत | कहानी | चैन की नींद | अलका प्रमोद | 7 |
| भारत | रपट | १२वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन-फीजी | प्रो. संजीव कुमार दुबे | 13 |
| ऑस्ट्रेलिया | समीक्षा | अरूणिमा - सुनहरे संसार की स्याह हकीकत | संजीव जायसवाल 'संजय' | 19 |
| अमरीका | कहानी | और बाड़ बन गई..... | सुधा ओम ढींगरा | 23 |
| भारत | कविता | मायका, वो | डॉ. उषा किरण, भारत | 31 |
| सिंगापुर | रपट | विश्व हिंदी दिवस सिंगापुर – 2023 | हेमा कृपलानी | 34 |
| सिंगापुर | रपट | प्रवासी भारतीय दिवस-सिंगापुर 2023 | आराधना झा श्रीवास्तव | 36 |
| सिंगापुर | कविता | लड़कियाँ | विनोद कुमार दुबे | 39 |
| सिंगापुर | कविता | वशीकरण, चलिए वसंत बन जाएँ | अदिति अरोरा | 41 |
| सिंगापुर | कविता, ग़ज़ल | मोबाइल की खिड़की से..., नफ़रतों से अब किनारा कर लिया जाये | आलोक मिश्रा | 43 |
| सिंगापुर | कविता | सत्य या भ्रम | प्रतिमा सिंह | 45 |
| सिंगापुर | ग़ज़ल | यूँ बेसबब किसी से अदावत नहीं रही | डॉ प्रतिभा गर्ग | 46 |
| सिंगापुर | कविता | बताओ वो भगवान कहाँ है? | अनुसूया साहू | 47 |
| सिंगापुर | कविता | वाह रे मनवा मन वाह रे वाह ! | डॉ. आभा मूँदड़ा | 48 |
| सिंगापुर | संस्मरण | माँ तुझे सलाम | हेमा कृपलानी | 49 |
| भारत | आलेख | भारतीय संस्कृति | डॉ राजेश मौर्य, डॉ दिलीप कटारे | 51 |
| सिंगापुर | हिंदी के वाहक | चिउने सुगिहारा | अकारी मोरी | 57 |

**पूर्णिमा वर्मन, शारजाह, संयुक्त अरब अमीरात**

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त पूर्णिमा वर्मन जी की जाल पत्रिकाएँ अभिव्यक्ति एवं अनुभूति वर्ष 2000 से अंतरजाल पर नियमित प्रकाशित होने वाली पहली हिन्दी पत्रिकाएँ हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान के पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार के साथ ही कई अन्य सम्मानों से सम्मानित पूर्णिमा जी लेखन एवं वेब प्रकाशन के अतिरिक्त जलरंग, रंगमंच, संगीत एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्यों से जुड़ी हुई हैं।

**संपर्क** – purnima.varman@gmail.com

# *एक उगता दिन गली में*

एक छोटा शहर
और उगता दिन
गली में
धुंध छँटने का समय है
जो कि छज्जों से फिसलती है सड़क पर
चित्र खिलने लग गए हैं रंग वाले
और आहट चल पड़ी कुछ राग दिन के छेड़ने को
जाग लेती चहल-पहलें
एक मौसी एक चाची
हाथ बाँधे चल पड़ी हैं
एक टेम्पो,
एक बकरी, एक वर्दी, एक लारी
सब कहीं जाने लगे हैं
हाँ कुछेक वाहन अभी सुस्ता रहे हैं
औ अभी विश्राम में हैं लोग आधे
आओ बैठो
चाय गुमटी में नया अखबार पढ़ लो
गले को ताजा करो
ये मसाला चाय है, पी लो
जरा ठहरो
कुछ समय में
भीड़ दौड़ेगी सड़क पर
सुबह का सुंदर सुनहरा रंग
गुमने लग चलेगा
धूल दौड़ेगी यहाँ पर
औ बगूले शोर के उठने लगेंगे
और हम भी चल पड़ेंगे काम पर अपने।

**********

# छूटा हुआ घर

छूटा हुआ घर
छूटता जाता है घर
फिर भी
वो हमारी याद में है
.
बिछुड़कर फिर से मिले
तब-
कुछ उदासी
कुछ खुशी में
देख कर लगता है ऐसा
हम भी उसकी याद में हैं
.
फिर गले लग जाएगा
वो हम से मिलकर
साँस में मिल जाएगा वो
हम से मिलकर
फिर पुराने फूल जो मुरझा गए थे
खिलखिलाकर जाग जाएँगे
उनींदे आलसों से
.
लैंप वो,
जो सो गए थे राह तकते
जगमगाएँगे रुपहली रौशनी से
.
हर सुबह फिर प्रार्थनाएँ
घर गुँजाएँगी
घास पर फिर रौनकें सजने लगेंगी
और फाटक पर खड़ी हो जाएँगी
कुछ गाड़ियाँ
.
जान जाएँगे सभी
इस घर के वासी लौट आए हैं
और सारी हलचलें जारी रहेंगी
जब तलक हम लौटकर जाते नहीं हैं
.
बस वही आना औ जाना
और फिर से लौट आना
यात्राओं के क्रमों में
दो ठिकाने
हम कहीं भी हों
जिसे हम छोड़ आते हैं
हमें वो याद आता है
उसे हम याद आते हैं।

************

**अलका प्रमोद, भारत**

वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि के साथ ही पत्रकारिता, वेब डिजाइनिंग में डिप्लोमा प्राप्त अलका प्रमोद जी की भिन्न विधाओं में 25 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं| उन्होंने लगभग 20 संकलनों का सह सम्पादन भी किया है | उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है|

**संपर्क -** pandeyalka@rediffmail.com

# "चैन की नींद"

'' हैलो मैम, मैं नन्दना बोल रही हूँ ,कैसी हैं आप?''

'' हुम्म इतने दिन बाद याद किया लगता है, मुझे भूल गयी हो '' कविता ने उलाहना दी।

'' क्या करें मैम समय ही नहीं मिलता। कभी मिनी को कुछ पूछना होता है, कभी नीपा को अपनी बात बतानी होती है, तो कभी सारा को मेरे साथ खेलना होता है '' नन्दना के स्वर में शिकायत कम प्रसन्नता अधिक परिलक्षित हो रही थी।

तभी पीछे से एक आवाज़ आयी '' मम्मी मेरी बात सुनो ...'' और नन्दना ने कहा '' मैम मैं बाद में बात करती हूँ और कॉल काट दी।

नन्दना का प्रफुल्लित स्वर सुन कर ही कविता एक सुखद आश्वस्ति के साथ ही अतीत के पन्नों में उलझ गयी।

दूर क्षितिज में डूबते सूरज को देखते हुए बालकनी में चाय पीना कविता के दिन का सबसे सुखद और निजी क्षण होता था। उस समय वह प्रायः घर में अकेली ही होती थी। डूबता रवि अपने साथ कविता की सम्पूर्ण थकान को भी डुबो देता था। चाय पीते-पीते अनायास ही उसे एक दिन पूर्व डाक से आयी पुस्तक की याद आ गयी और पुस्तक को देखने की उत्सुकता में उसने क्षितिज को निहारने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। पता नहीं किसने भेजी है, उसने तो मँगायी नहीं थी सोचते हुए कविता ने पैकेट खोला तो एक उपन्यास था, जिसके आवरण पर घुटनों में सिर रखे लड़की का रेखाचित्र बना था शीर्षक था '' किससे कहूँ ''। लेखिका का नाम था, नन्दना। कविता सोचने लगी 'यह उपन्यास मुझे किसने और क्यों भेजा है? कहीं गलती से तो मेरे पास नहीं आ गया? पर लिफ़ाफ़े पर पता और नाम तो मेरा ही है।'

कविता ने अपनी स्मृति पर जोर डाला पर उसे नन्दना नाम की कोई परिचित ध्यान में नहीं आयी, उसने उपन्यास को उलट-पलट कर देखा, फिर सोचा 'चलो देखते हैं, आखिर है क्या इस उपन्यास में। '

कविता ने उपन्यास पढ़ना प्रारम्भ किया तो पढ़ती ही चली गयी। .........

नन्ही निती स्कूल से लौट कर दौड़ती हुई अन्दर आती है '' मम्मा देखिये क्लास में फ़र्स्ट आयी हूँ।''

'' अच्छा वेरी गुड '' मम्मा ने उसे प्यार से गले लगाया और रानी आंटी को उसे चाकलेट वाला दूध देने का निर्देश दे कर स्वयं तैयार होने लगीं।

निती बताना चाहती थी कि मैम ने उसकी कितनी तारीफ की और जब वह स्टेज पर आयी तो सारे बच्चों ने ताली बजायी तो उसे कितना अच्छा लगा। पर मम्मा तो बाथरूम में चली गयीं।

निती अभी दूध पी ही रही थी कि मम्मा ने आ कर कहा '' निती मम्मा ऑफिस जा रही है, शाम को मिलते हैं।''

# कहानी– भारत से

निती ठुनकी '' मम्मा प्लीज आज ऑफिस  मत जाइये।''
'' बेटी मम्मा की मीटिंग है, ऑफिस तो जाना ज़रूरी है। ''
''अच्छा, रानी आंटी तुम्हारे लिये टीवी लगा देंगी, आज तुम अपनी मन पसंद कार्टून फ़िल्म देख लेना फिर सो जाना।''
मम्मा ने रानी से कहा '' बेबी को आज कार्टून फ़िल्म देख लेने देना, फिर सुला देना। जब उठे तो उसका होमवर्क करवा देना।''

निती ने गुस्से में दूध का गिलास फेंक दिया। रानी ने कहा '' मम्मा तो गयीं   अब गुस्सा दिखाने से क्या फायदा।''
निती चुप-चाप जा कर कमरे में लेट गयी। उसने टीवी भी नहीं देखा।

शाम को मम्मा-पापा आये तो पापा ने उसे प्यार करते हुए कहा '' आज हमको पता चला है कि मेरी बेटी क्लास में फ़र्स्ट आयी है। देखो मैं उसके लिये वीडियो गेम ले कर आया हूँ।''
'' और मम्मा अपनी बेटी के लिये, उसकी मन पसंद आइसक्रीम लायी हैं '' मम्मा ने कहा।

निती नये गेम में मगन हो गयी। रात में सोते समय अचानक उसे अपनी स्कूल वाली बात याद आयी, उसका मन किया कि मम्मा को बताये, इसीलिये उठ कर वह मम्मा के कमरे में गयी। मम्मा लैपटाप पर कुछ काम कर रही थीं और पापा मोबाइल पर किसी से बात कर रहे थे। मम्मा ने कहा '' अरे हमारी बेटी सोयी नहीं अभी तक ?''
'' मम्मा मुझे आपसे बात करनी है '' निती ने उनकी गोद में चढ़ते हुए कहा।
मम्मा ने कहा '' बेटी दस बज गये हैं सुबह तुमको स्कूल भी जाना है न? जाओ सो जाओ नहीं तो नींद पूरी नहीं होगी।''
'' मुझे नहीं सोना है।''
'' निती डोन्ट बी बैड गर्ल जाओ, सो जाओ '' कहते हुए मम्मा उसे गोद में उठा कर बिस्तर पर सुला आयीं।.......

यह तो रोज़ की ही बात हो गयी थी, उसे कितनी बातें मम्मा-पापा को बतानी होतीं पर उनके पास समय ही नहीं होता। धीरे-धीरे निती ने मम्मा-पापा से कुछ कहना छोड़ दिया। उसने अपनी एक गुड़िया को अपनी दोस्त बना लिया। अब उसे जो भी बात बतानी होती अपनी गुड़िया से करती। उसने गुड़िया का नाम चिंकी रखा था। वह स्कूल से आ कर रोज़ चिंकी को स्कूल की सारी बातें बताती। कभी कहती '' पता है चिंकी मेरे क्लास में जो तनुज पढ़ता है बहुत गंदा है। जब मैं खेलती हूँ न तो मुझे धक्का दे देता है। मेरी पेंसिल भी चुरा लेता है। तुम उससे कभी बात मत करना।''
फिर चिंकी का सिर स्वयं ही हिलाती, मानो चिंकी ने कहा हो नहीं।
कभी कहती '' चिंकी तुम मेरी बेस्ट फ्रेंड  हो, स्कूल में मायरा भी मेरी फ्रेंड  है पर वह कभी मेरे साथ खेलती है तो कभी मुझे छोड़ कर सामी के साथ खेलने लगती है। पर तुम तो केवल मेरे साथ रहती हो, मेरी सारी बातें भी सुनती हो। आय लव यू।'' निती उसे अपने वक्ष से लगा लेती।

वह रात को सोती तो चिंकी के साथ, अपना होमवर्क करती तो चिंकी को पास बैठा कर। रात में उसकी नींद खुलती तो सबसे पहले उसे टटोल कर अपने हृदय से चिपका लेती।

एक दिन निती स्कूल से लौटी तो अपने कमरे में नित्य की भाँति  वह चिंकी को लेने गयी पर उसे चिंकी मिली ही नहीं। उसने बहुत ढूँढा, फिर दौड़ कर रानी आंटी के पास गयी ''रानी आंटी मेरी चिंकी नहीं मिल रही ,क्या आपने उसे देखा है?''
'' नहीं बेबी मैं तो तुम्हारे कमरे में गयी ही नहीं।''
निती ने मम्मा को मोबाइल पर कॉल किया '' मम्मा मेरी चिंकी कहीं खो गयी है।''
मम्मा ने कहा '' बेटी अभी मैं मीटिंग में हूँ शाम को आ कर

# कहानी– भारत से

बात करेंगे।''

निती के लिये पूरा दिन व्यतीत करना दूभर हो गया। शाम को मम्मा के आते ही वह दौड़ कर गयी और आँखों में आँसू भर कर बोली '' मम्मा मेरी चिंकी पता नहीं कहाँ चली गयी।''

मम्मा ने उसे एक सुंदर सी नई गुड़िया देते हुए कहा '' अरे देखो मैं तुम्हारे लिये उससे भी सुंदर गुड़िया ले आयी हूँ।''

निती ने उस गुड़िया को उठा कर दूर फेंक दिया और मचल कर बोली '' मुझे मेरी चिंकी चाहिये, यह नहीं चाहिये।''

मम्मा ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा ''बेटी वह तुम्हारी गुड़िया बहुत पुरानी और गंदी हो गयी थी। ''

''तुम इसी का नाम चिंकी रख लो, देखो इसकी तो नीली आँखें हैं इसकी फ्राक भी कितनी सुंदर है। ''

पर निती ने उसे हाथ भी नहीं लगाया वह चिंकी की ही रट लगाये रही। उस दिन निती रोते-रोते ही सो गयी।

अजेय ने निशा से कहा '' तुमको निती की गुड़िया फेंकने से पहले उससे पूछ लेना चाहिये था।''

निशा ने कहा '' वह इतनी गंदी और पुरानी हो गयी थी इसीलिये फेंक दी, मैंने सोचा था कि निती नयी और इतनी सुंदर गुड़िया देख कर खुश हो जाएगी, मुझे क्या पता था कि वह इतनी नाराज़ हो जाएगी। वैसे भी आज कल कुछ ज़्यादा ही जिद्दी होती जा रही है।''

निशा और अजेय के लिये चिंकी भले ही एक निर्जीव गुड़िया थी पर निती के लिये उसकी सबसे आत्मीय साथी खो गयी थी। वह उसे भूल नहीं पा रही थी। धीरे-धीरे उसने चिंकी के वापस आने की आस छोड़ दी।.......

जैसे-जैसे वह बड़ी हो रही थी, घर पर, अपने कमरे में ही रहने लगी थी। एक दिन निती एकान्त में बैठी कुछ बड़बड़ा रही थी। निशा ने देखा तो उससे पूछा '' यह अकेले में क्या बड़बड़ा रही थी निती?''

निती मम्मा को देख कर चुप हो गयी।

निशा ने अजेय से कहा '' निती दिन पर दिन अन्तर्मुखी होती जा रही है। आज मैंने देखा अपने कमरे में बैठी पता नहीं क्या बड़बड़ा रही थी।''

अजेय ने कहा '' तुम उसको थोड़ा समय दिया करो, मुझे तो लगता है कि उसे अकेलापन लगता है।''

'' मतलब तुम्हारे हिसाब से मैं उसका ध्यान नहीं रखती।''

अजेय ने कहा '' मेरा मतलब यह नहीं है पर वह बड़ी हो रही है हमको ध्यान रखना चाहिये।''

'' मैं उसकी ज़रूरत का सारा सामान तो उसके कहने से पहले ही उसके लिये ला देती हूँ। मुझे विश्वास है कि उसके पास जितने कपड़े, मोबाइल, घड़ी वगैरह हैं उसकी किसी भी दोस्त के पास नहीं हैं।''

''मैं तुम्हारी समस्या समझता हूँ, मुझे पता है निशा, तुम कितनी बिजी रहती हो। आखिर हम दोनों जो भी कर रहे हैं निती के लिये तो कर रहे हैं न? पर वह अभी बच्ची है, समझती नहीं, जब बड़ी होगी तब समझेगी कि हमने उसके लिये क्या किया।''

निशा ने कहा '' चलो आज हम तीनों कहीं घूमने चलते हैं निती का मूड बदल जाएगा।''

अजेय ने निती को बुला कर कहा '' निती बेटी चलो आज हम लोग पिकनिक पर चलते हैं।''

निती ने प्रफुल्लित हो कर कहा '' सच पापा? आप और मम्मा दोनों लोग मेरे साथ चलेंगे, वाउ मज़ा आयेगा।''

निती तुरंत तैयार हो कर, खेलने के लिये रैकेट, शटलकॉक ले कर अपने कमरे से बाहर आयी। उसने देखा मम्मा साड़ी पहन कर तैयार हैं। उसने कहा '' मम्मा आप पिकनिक पर

साड़ी पहन कर चलेंगी? फिर तो आप खेल चुकी बैडमिंटन मेरे साथ।''

निशा ने कहा '' नो माई बेबी मेरे आफिस से फोन आ गया मुझे अभी जाना होगा । हम लोग अगले संडे को चलेंगे।''

नीती के उत्साह का गुब्बारा फुस्स हो गया। उसने सोच लिया था कि अब वह अगले संडे भी पिकनिक पर नहीं जाएगी। उसे जाना ही नहीं है इन लोगों के साथ। .......

एक दिन पापा ने पुकारा नीती...''

नीती अपने कमरे से आ कर बोली '' पापा आपने मुझे बुलाया?''

'' तुमने बताया नहीं तुम नेशनल बैडमिंटन टीम में खेलने के लिये चुनी गयी हो।''

''मैं भूल गयी होऊँगी।'' नीती ने लापरवाही से कहा। तभी निशा भी आ गयी । अजेय ने कहा '' देखो हमारी नीती नेशनल लेवल की टीम में चुनी गयी है और पेपर में इसका नाम निकला है।''

निशा ने खुश हो कर कहा '' अरे वाह हमारी बेटी तो लाखों में एक है, क्या पढ़ायी, क्या स्पोर्ट्स और क्या आर्ट।''

अजेय ने गर्व से कहा '' आखिर बेटी किसकी है। बोलो बेटी! इसी बात पर  क्या इनाम  लोगी? तुम जो माँगो मिलेगा।''

निशा ने भी हँसते हुए कहा '' बेटी पापा बड़ी मुश्किल से देते हैं, माँग लो जो लेना हो तुमको।''

पर नीती ने निर्लिप्त भाव से कहा '' आपने पहले ही सब कुछ दे दिया है और मैं क्या माँगू।''

निशा ने कहा '' हमारी बेटी तो अभी से संन्यासिन बन गयी है। न तो इसे पहनने का शौक है, न सजने का। मैं इसके लिये देश-विदेश से कितनी ड्रेसेस लाती हूँ पर सब अलमारी में वैसे ही पड़ी रहती हैं।''

नीती अपने कमरे में चली गयी। वह मम्मा को बताना चाहती थी कि उसे ड्रेसेस नहीं चाहिये, उसे मम्मा से बात करने का मन होता है, पापा के साथ कहीं लान्गड्राइव पर जाने का मन होता है। पर वह जानती है वह दोनों कितने व्यस्त हैं उनके पास समय नहीं है, इसीलिये वह कुछ नहीं कहती। वह तो यह भी नहीं बताती कि  मानस उसे रोज तंग करता है । उसे पता है मम्मा उसकी किसी बात को गंभीरता से लेती ही नहीं। एक बार उसने उन्हें बताना चाहा था

''मम्मा मुझे मानस बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।''

''वह मानस, पर वह तो तेरे साथ बचपन से पढ़ा है न?''

'' हाँ पर बचपन की बात और है । अब वह जब देखो काफी पीने चलने को कहता रहता है।''

'' अरे तो क्या हुआ तुम्हारा पुराना फ्रेंड है चली जाओ उसके साथ।''

'' पर मेरा मन नहीं करता '' नीती ने कहा।

'' इस बात पर इतनी परेशान क्यों हो मना कर दो। वैसे मुझे लगता है कि तुम कुछ ज़्यादा ही रिजर्व होती जा रही हो। अरे अपने दोस्तों से मिलो-जुलो घूमो-फिरो '' कहते-कहते निशा अपने लैपटाप पर काम में व्यस्त हो गयी। ...........

एक दिन स्कूल के बाद मानस ने उसे रोक कर कहा '' आज तो तुमको मेरे साथ काफ़ी पीने चलना ही होगा।

नीती ने कहा '' कोई जबरदस्ती है, मुझे तुम्हारे साथ काफी पीने नहीं जाना है।''

मानस ने कहा ''तुम्हें चलना तो पड़ेगा, मेरे फ्रेंड्स ने मुझे चैलेंज किया है कि मैं तुम्हारे साथ काफी पीने जा कर दिखाऊँ।''

'' यह तुम्हारी प्राब्लम है ,मैं क्यों जाऊँ ?'' कहते हुए वह आगे बढ़ने लगी तो मानस ने उसका हाथ पकड़ लिया। नीती को गुस्सा आ गया उसने उसे एक झापड़ मार दिया। उस समय स्कूल के और छात्र-छात्राएँ भी थे। उनके सामने झापड़ खा कर मानस बौखला गया। उसने धमकी दी ''मैं तुमको

छोड़ूँगा नहीं।''

नीती आगे बढ़ गयी। दूसरे दिन क्लास में जब संजय सर मैथ्स पढ़ा कर बाहर निकले तो क्लास के सब छात्र-छात्राएँ झुंड बना कर मोबाइल पर वीडियो देखने लगे। निती ने आ कर कहा '' तुम लोग क्या देख रहे हो, हमको भी दिखाओ।''

इस पर कुछ छात्र मुँह दबा कर हँसने लगे, कुछ वहाँ से हट गये। निती को कुछ समझ न आया, उसने प्रिया के हाथ से मोबाइल ले कर देखा। उस पर उसने जो देखा उसे देख कर वह स्तब्ध रह गयी। उसी की गंदी-गंदी वीडियो थी। वह समझ गयी कि यह मानस ने ही उसके झापड़ का बदला लेने के लिये, उसका झूठा अश्लील वीडियो बना कर वायरल किया है। पर वह तो वहाँ था ही नहीं, शायद आज स्कूल ही नहीं आया था। निती के मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया। वह किसी तरह घर आयी तो बदहवास सी अपने कमरे में गयी। उसने आवेश में अपना बस्ता उठा कर फेंक दिया। उसकी दृष्टि के सामने अपना वह अश्लील वीडियों तैर रहा था, वह लज्जा से पानी-पानी हुई जा रही थी। अब वह कैसे किसी से आँख मिलाएगी, सब उसके बारे में क्या सोचेंगे। उसके कहने से कोई मानेगा क्या कि यह वीडियो झूठा है। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, तभी उसे चाकू रखा दिख गया उसने उठा लिया अपनी हाथ की नस काटने के लिये। वह नहीं जी सकती इतना अपमान ले कर। पर इससे पूर्व कि वह अपनी नस काटती, पता नहीं कैसे मम्मा आ गयीं। उसकी मनोदशा से अनभिज्ञ, उन्होंने कहा '' अरे यह कमरे का क्या हाल बना रखा है तुमने? इतनी बड़ी हो गयी हो पर कभी सामान ठीक से नहीं रखती।''

सुनते ही निती को पता नहीं क्या हुआ उसने अपनी नस काटने के बजाये मम्मा पर उसी चाकू से लगातार वार पर वार कर दिये। निशा इस हमले के लिये तैयार नहीं थी अतः संभल भी नहीं पायी और गिर पड़ी। निती पागलों की तरह मम्मा पर वार करती रही और चिल्लाती रही '' सब तुम्हारी वजह से हुआ है सब तुम्हारी वजह से हुआ।''

जब उसे होश आया तब तक मम्मा इस दुनिया को छोड़ कर जा चुकी थीं। अब उसे सुध आयी कि उसने क्या कर डाला। निती मम्मा से लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़ी।.......

उपन्यास की अंतिम पंक्तियाँ पढ़ते-पढ़ते कविता को अनायास ही अपनी वर्षों पुरानी छात्रा नितारा की याद आ गयी। उसकी माँ की भी तो हत्या हुई थी। कुछ दबे शब्दों में यह अफवाह उड़ी थी कि नितारा ने ही अपनी मम्मा को मार दिया। पर इस पर भला कौन विश्वास करता। नितारा जैसी शान्त लड़की ऐसा क्यों करती। हाँ अपनी मम्मा की मौत के बाद नितारा ने वह स्कूल अवश्य छोड़ दिया था। ज्ञात हुआ था कि वह कहीं बाहर पढ़ने चली गयी थी।

कविता की प्रिय छात्रा थी नितारा। मेधावी पर हमेशा चुप अपने में गुमसुम रहने वाली नितारा के प्रति न जाने क्यों कविता को विशेष स्नेह उमड़ता था। उसे नितारा को देख कर सदा यह अनुभव होता था कि इसके अंदर बहुत कुछ है जो यह कहना चाहती है। इसीलिये वह उस पर विशेष स्नेह रखती थी और उससे स्कूल के बाद प्रायः ही बात कर लिया करती थी। पर समय की रेत में नितारा की स्मृति कहीं दब गयी थी जो पुनः उभर आयी।

इस उपन्यास की नायिका निती की बहुत बातें नितारा की ही कहानी लग रही थीं। क्या पता यह कहानी उसी की हो ? नहीं-नहीं यह तो मात्र संयोग है। सोच कर कविता ने अपनी सोच को पिटारे में बन्द कर दिया। पर उसकी सोच ढीठ

बच्चे की तरह मना करने पर भी बार-बार पिटारे से बाहर झाँकने लगती। कविता चाह कर भी इस उपन्यास की नायिका निती और नितारा के जीवन की समानता को मात्र संयोग मान कर हवा में उड़ा नहीं पा रही थी। इस उपन्यास ने कविता की नींद उड़ा दी। अंततः उसने निश्चय कर लिया नन्दना से संपर्क करने का। उसने पुस्तक उलट-पलट का देखा तो उसे नन्दना का मोबाइल नम्बर मिल गया। उसने कॉल किया तो उधर से आवाज़ आयी '' जी मैं नन्दना बोल रही हूँ।''

कविता ने कहा '' तुम नितारा हो न?''

'' आप कविता मैम हैं न?''

'' मतलब तुम नितारा ही हो।

'' उपन्यास तुम्हारी अपनी कहानी है न?''

''जी मैम।''

''तो तुमने ही मुझे भेजा था।''

''जी मैम।''

'' तो क्या तुमने ही मम्मा को?''

'' जी मैम।''

'' तो अब तुम कहाँ हो और मुझे यह उपन्यास क्यों भेजा?''

कुछ देर चुप रह कर नन्दना बोली'' मैम मैं अपने अतीत से पीछा नहीं छुड़ा पा रही हूँ।''

'' उस दिन मैंने न जाने किस जुनून में मम्मा पर वार कर दिया था। वह तो मम्मा के पीछे-पीछे ही गाड़ी पार्क करके पापा भी आ गये, उन्होंने जब यह देखा तो उन्होंने मुझे सँभाला और साक्ष्य मिटा दिये। कुछ पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव, कुछ मेरी कम आयु और पापा के सक्षम वकीलों के कारण केस का निर्णय मेरे पक्ष में हुआ। मुझे संशय के आधार पर छोड़ दिया गया। मैम, पापा ने मुझे अमेरिका भेज दिया। अब मेरा नाम नन्दना है और यहाँ कोई मेरा अतीत नहीं जानता।''

'' तो तुम उस अतीत को फिर से क्यों जीवित कर रही हो?''

'' मैम मेरे मन में वह अतीत मरा ही कहाँ, मैं आज तक यह बोझ ले कर जी रही हूँ। मैं एक क्षण भी नहीं भूल पाती कि मैं अपराधी हूँ।''

'' मैम एक आप ही हैं जो मुझे समझती थीं। आप उस समय एक माह की छुट्टी पर न होतीं तो मैं आपको अपनी समस्या बताती। मुझे विश्वास है आप कोई न कोई राह निकाल लेतीं और वह सब न होता।''

'' पर अब तुम मुझसे क्या चाहती हो?''

'' मैं उस अतीत से छुटकारा चाहती हूँ, पश्चाताप करना चाहती हूँ। मैंने उपन्यास लिख कर अपना अपराध स्वीकारा कि शायद अब मुझे चैन मिले पर फिर भी नहीं मिला। मुझे आज भी विश्वास है कि आप ही मुझे राह दिखा सकती हैं। ''

कविता को नितारा पर दया आयी उसने कहा ''दुनिया में बहुत नितारा हैं उन्हें ढूँढो और जो तुमने नहीं पाया वह उनको दो। नितारा को तो जीते-जी मरना पड़ा पर अब किसी और नितारा को मर कर नन्दना का जन्म न लेना पड़े।''

आज नन्दना की कॉल के बाद कविता को विश्वास हो गया कि अब वह चैन की नींद सोती है।

*********

**प्रो संजीव कुमार दुबे , भारत**

पच्चीस  वर्षों से हिन्दी अध्ययन-अध्यापन से जुड़े प्रो दुबे गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति संस्थान के अधिष्ठाता और हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं। प्रो दुबे ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिसंवादों का संयोजन किया है। प्रो दुबे के लगभग चालीस शोध आलेख और दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। वे आधुनिक कविता, हिन्दी कथा साहित्य, हिन्दी सिनेमा और पत्रकारिता पर लेखन और शोध में सक्रिय हैं।

# फीजी में १२वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

दक्षिण प्रशांत महासागर के मध्य स्थित फिजी के दिनाराउ द्वीप के सात सितारा शेरेटन होटल में १२ वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। एयरपोर्ट से आयोजन स्थल तक बड़े-बड़े होर्डिंग लगाए गए थे, जिनमें फिजी भाषा में 'बुला' और हिन्दी में लिखा नमस्ते आगंतुकों को आयोजन स्थल पर आमंत्रित कर रहे थे। फ़िजी विधि-विधानों से उद्घाटन के साथ तीन दिवसीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की शुरुआत हुई। सभागृह विश्व भर के हिन्दी प्रेमियों से खचाखच भरा था। पीछे बड़ी संख्या में लोग खड़े भी दिखाई दिए। स्थानीय फीजियन कर्मकाण्डों के साथ उद्घाटन समारोह को देखना एक अलग अनुभव था। कर्मकांडों को देख नाक-भौं सिकोड़ने की जगह समावेशिकता का भाव सभी में दिखाई दिया। उद्घाटन समारोह को देखते हुए हिन्दी फ़िल्मों में

चित्रित आदिवासी समाज के क्रिया कलाप के दृश्य याद आ रहे थे। मंच पर फ़िजी राष्ट्रपति और भारत के विदेश मंत्री उपस्थित थे। दोनों विनम्रतापूर्वक कर्मकांडीय विधानों का अनुपालन कर रहे थे। भारतीय प्रतिनिधि मंडल में आए लगभग तीन सौ लोगों को दिनाराऊ द्वीप के विभिन्न महँगे होटलों में ठहराया गया था। ये लोग उन भाग्यशालियों में थे जिन्हें दस फरवरी को अपराह्न में प्रतिनिधि मंडल में शामिल किए जाने की सूचना दी गई और तेरह फरवरी की सुबह विशेष विमान से फिजी चलने के लिए एयरपोर्ट पर पहुँचने का आग्रह किया गया था।

आयोजन के तीनों दिन बड़ी संख्या में भारतीय और फ़िजी मूल के स्वयंसेवक आवभगत में लगे रहे। महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक थी। महिलाओं और पुरुषों ने अपने एक कान में फूल सजा रखे थे जो रूप की शोभा बढ़ाने के साथ संकेतक का भी काम कर रहे थे। उत्सुकता ज़ाहिर करने पर एक स्थानीय महिला स्वयंसेवक ने बताया कि यदि किसी ने बाएँ कान पर फूल सजा रखे हैं तो इसका मतलब वह अविवाहित है और यदि दाएँ कान पर फूल सजे हैं तो समझिए कि विवाहित। उद्घाटन की रस्मों के बाद भाषण और प्रपत्र प्रस्तुति का सिलसिला शुरु हुआ। सत्रों में अफ़रातफ़री का माहौल देखा गया। समानांतर सत्रों में किसे कहाँ बोलना है इसकी स्पष्टता नहीं थी। विश्व हिन्दी सम्मेलन की वेबसाइट पर भी कोई जानकारी साझा नहीं की गई थी। आयोजन समिति से जुड़े लोगों ने सोशल मीडिया पर गर्व से घोषित किया कि मैंने तैयारी अमुख विषय पर की थी और बोलने के लिए विमुख सत्र में कहा गया है। विनम्रता का आलम यह था कि नये विषय की विशेषज्ञता और तैयारी के न होते हुए भी वे अतिरिक्त समय लेकर बिना रुके बोलते रहे, तो कुछ लोग ख़ाली मंच के पोडियम पर फ़ोटो खिंचवा कर सोशल मीडिया पर पोस्ट करते देखे गए। सम्मेलन का मूल विषय "पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक" रखा गया था पर सत्रों के विभाजन और वक्ताओं के चयन में मूल विषय से संगति का घोर अभाव था। जहाँ एक तरफ सरकारी प्रतिनिधि मंडल को सात सितारा सुख-सुविधा प्राप्त थी वहीं विदेश मंत्रालय के आग्रह पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा नामित प्रतिनिधियों और सामान्य प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी सम्मलेन की वेबसाइट पर उल्लेख के बावजूद एयरपोर्ट और होटल से आयोजन स्थल तक ले जाने और लौटाने की व्यवस्था के बारे में बताने को कोई तैयार नहीं था। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन का आयोजन 1975 से आरंभ हुआ है। अब तक कुल १२ आयोजन हो चुके हैं। प्रत्येक आयोजन में कुछ प्रस्ताव पारित होते हैं पर उनके कार्यान्वयन पर गंभीरता का अभाव आयोजन को कर्मकांड तक सीमित कर देता है।

भारत और फ़िजी द्वीप समूह का रिश्ता लगभग डेढ़ सदी पुराना है। माना जाता है कि यूरोपीय औपनिवेशिक देशों द्वारा फ़िजी पर आधिपत्य के पहले अफ्रीकी मूल के लोग यहाँ आकर बसे थे। 1874 में ब्रिटेन ने फ़िजी को अपना उपनिवेश बना लिया और गुलाम देशों के नागरिकों को फ़िजी भेजने का सिलसिला शुरू हुआ। 14 मई, 1879 को पहला ब्रिटिश जहाज विभिन्न भाषा भाषी भारतीय मज़दूरों को लेकर फ़िजी पहुँचा था। 1879 से 1916 के बीच 87 जहाज़ों में भरकर लगभग 61000 भारतीयों को शर्तबंदी मज़दूर के रूप में गन्ने के खेतों मे काम करने के लिए लाया गया। इन मज़दूरों में हिन्दी प्रदेशों के अवधी, भोजपुरी अंचल के गिरमिटियों की बहुतायत के साथ अन्य अहिन्दीभाषी मज़दूर भी थे। भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों की एकता, भाईचारे और संस्कृति की भाषा के रूप में "फ़िजी बात" यानी फ़िजी हिन्दी का विकास हुआ। आज फ़िजी हिन्दी फ़िजी द्वीप समूह की तीसरी राजभाषा है। फ़िजी के कई रेडिओ चैनलों पर हिन्दी के गीत लगातार सुनाए जाते हैं। फ़िजी की कई टैक्सियों में यात्रा के दौरान फगुआ-चौताल सुनने का भी मौका मिला। टैक्सी ड्राइवर सतीश चंद ने बताया कि बसंत पंचमी के बाद से ही मुहल्ले में फगुआ चौताल गाने की शुरुआत हो जाती है। डेढ़ सदी बाद भी बिरहा, चौताल, फाग, बिदेसिया, सोहर, लोरी और आल्हा जैसे

# रिपोर्ट – भारत से

मूल भूमि के लोक गीतों से अटूट जुड़ाव हृदय को अभिभूत कर देता है।

भारत में अंग्रेज़ों का शासन आरंभ होने से लेकर 1920 तक भारतीय क्षेत्रों से शर्तबंदी मज़दूरों को विभिन्न उपनिवेशों पर खेती करने के लिए ले जाया गया। अनुबंध तो पाँच साल का किया गया था पर आर्थिक परिस्थितियों के दबाव और जानकारी के अभाव के चलते ज़्यादातर लौट नहीं पाए। भारत में यह वो दौर था जब निम्न-मध्य वर्ग के लोगों में विदेश यात्रा को अच्छा नहीं माना जाता था। जिन्हें गिरमिटिया के तौर पर ले ज़ाया गया वे विभिन्न भाषा क्षेत्रों के थे। समाजिक-आर्थिक कारणों से ज़्यादातर निम्न जाति और वर्ग से ताल्लुक़ रखते थे। इनके लिए लौट कर अपने समाज में पुनः जगह बनाना इतना आसान नहीं रहा होगा। लिहाज़ा समुद्री द्वीपों को अपना वतन मान वे वहीं बस गए। भाषा, धर्म और रीति रिवाजों का कड़ाई से पालन ही वतन से दूरी पाटने का ज़रिया बना। आर्य प्रतिनिधि सभा, सनातन धर्म सभा जैसी संस्थाओं ने भी इनके बीच कार्य किया। इन संस्थाओं ने गिरमिटियों का आध्यात्मिक नेतृत्व किया। अपनी सामाजिक-वर्गीय स्थिति के कारण इन लोगों ने शारीरिक परिश्रम करने में कोई कमी नहीं की। अपने अपने देशों में विकास के लिए इन लोगों ने अपना खून-पसीना बहाया। राजनीतिक स्तर पर भी इन्हें सफलता मिली। कई देशों में गिरमिटियों की पीढ़ी के लोगों ने देश का शीर्ष नेतृत्व भी संभाला। फ़िजी में तोताराम सनाढ्य, अमिचंद्र विद्यालंकार, कमला प्रसाद मिश्र, जोगिंदर सिंह कँवल, विवेकानंद शर्मा, अमरजीत कौर और सुब्रमनी ने हिन्दी भाषा की अलख जगाई। तोताराम सनाढ्य गांधी जी के अनन्य अनुयायी थे। गिरमिटियों के अधिकारों के लिए उन्होंने बहुत काम किया। “फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष” नामक पुस्तक में उन्होंने भारतीयों पर किये जा रहे ज़ुल्मों का कच्चा चिट्ठा सबके सामने रखा। फ़िजी में गिरमिट प्रथा की समाप्ति में उनकी पुस्तक की बड़ी भूमिका है। अमिचंद्र विद्यालंकार ने फ़िजी में भारतीयों के लिए शिक्षा की व्यवस्था का प्रारंभिक प्रयत्न किया। पंडित कमला प्रसाद मिश्र को फ़िजी का राष्ट्र कवि कहा जाता है। उनकी रचनाओं में भारतीय मज़दूरों की फ़िजी यात्रा और उनके संघर्षों की वेदना का चित्रण है। मूलतः मलयाली सुब्रमनी को हिन्दी के पितामह का दर्जा प्राप्त है। “डउका पुरान” और “फ़िजी माँ” उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ है। वर्तमान में उत्तरा गुरुदयाल, मनीषा रामरखा, सुभाषिणी, प्रवीणा, नरेश चंद, रोहिणी कुमार, श्यामला आदि हिन्दी अध्यापन और लेखन में सक्रिय हैं।

भाषा मानव समुदायों को कैसे जोड़ती है इसका उत्कृष्ट नजारा फ़िजी में देखने को मिलता है। भारत के विभिन्न प्रांतों से गिरमिटिया के रूप में फ़िजी लाए गए मजदूरों की एक भाषा नहीं थी। अमानवीय ब्रिटशों ने गुलाम देशों से लाए मज़दूर दंपतियों

तक को अलग-अलग समूहों में मज़दूरी के लिए भेजा। जो जिस मालिक के खेतों में काम करने गया उसने वहाँ एक नई ज़िंदगी शुरू की। भाषा ही नहीं नस्ल का भेद भी उन्हें नई ज़िंदगी शुरू करने से नहीं रोक सका। परिणामतः सब एक दूसरे से न सिर्फ़ घुलमिल गए बल्कि उन्होंने हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में अपना लिया जिसमें मुख्यतः अवधी की शब्दावली इस्तेमाल होती है। भारत में विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच राजनीतिक कारणों से तनाव पैदा करने की कोशिश होती है पर यहाँ भाषा, धर्म और नस्ल तक को हिन्दी जोड़े हुए है। फ़िजी में पहले बसनेवाले अफ़्रीकियों की बस्ती में एक अफ़्रीकी मूल के व्यक्ति को हिन्दी बोलते सुन मन आह्लादित हो गया। फ़िजी के किसी चौक, चौराहे, दुकान-बाज़ार में लोग हिन्दी बोलते लोग मिल जाएँगे। यहाँ के लोगों में भारत के प्रति एक उत्सुक स्नेह भाव है। तीसरी-चौथी पीढ़ी के भारतीय फिजियों को यह नहीं पता कि उनके पूर्वज भारत के किस राज्य या ज़िले से लाए गए थे। इसका एक कारण उनके पूर्वजों का छोटी उम्र का और निरक्षर होना था। बावजूद इसके वे तुलसी के रामचरितमानस को अपने साथ लाए थे। गोरे मालिकों के अमानवीय अत्याचारों को दिन भर सहने के बाद भी शाम को मानस का पाठ करना वे नहीं भूलते थे। आज फ़िजी में लगभग दो हज़ार मानस पाठ करनेवाली मंडलियाँ हैं। कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि तुलसी के रामचरितमानस ने फ़िजी में भारतीयों को न सिर्फ़ सांस्कृतिक रूप से जोड़ा अपितु हिन्दी भाषा की मज़बूत बुनियाद रखी। यह जानना रोचक है कि दुनिया भर में तिथि का निर्धारण करनेवाली अंतरराष्ट्रीय डेटलाइन फ़िजी से होकर गुजरती है। सुदूर पूरब में होने के कारण भारत से साढ़े छह घंटे पहले फ़िजी में सूर्योदय होता है। यदि फ़िजी के सूर्योदय और और मारीशस के सूर्यास्त के बीच दिन का मान निकाला जाए तो कह सकते हैं कि हिन्दी का सूरज दिन के बीस घंटे जगमगाता है।

भारतीय मूल के फीजियों की आबादी बहुत बड़ी असमानता की शिकार है। कुछ भारतीय यहाँ बहुत बड़े-बड़े उद्योगों और मालों के मालिक हैं तो बड़ी संख्या उन लोगों की है जो आज भी लीज़ पर ली ज़मीनों पर खेती कर रहे हैं या छोटी मोटी नौकरी कर गुज़ारा कर रहे हैं। न उनके पास अपनी ज़मीन है न अपनी ज़मीन पर मकान। आसमान तब भी उनका था और आज भी आसमान सा ख़ालीपन उनकी आँखों में देखा जा सकता है। दो दिनों से फ़िजी घुमा रहे टैक्सी ड्राइवर सतीश चंद को हमने तीन सौ तीस डालर का भुगतान किया। फ़िजी के बाज़ारों में छोटी मोटी ज़रूरतों का सामान ख़रीदते हुए हमने जाना कि इस कमाई से पाँच लोगों का उनका परिवार बड़ी मुश्किल से ही चलता होगा। सतीश चंद का अपने पिता के प्रति प्रेम देख हम भावुक हो उठे। यात्रा के दौरान हमने उन्हें खाखरा खाने को दिया जो उन्हें पसंद आया। जब हमने दुबारा लेने का आग्रह किया कि तो उन्होंने बड़े संकोच से एक खाखरा अपने पिता के लिए लेकर रख लिया। सतीश चंद पुराने हिन्दी सिनेगीतों में गहरी रुचि रखते हैं। मुकेश और किशोर कुमार के गाए नग्मों को आप उनसे कभी भी सुन सकते हैं। फ़िजी में पर्यटन आय का प्रमुख स्रोत है। भारतीय मूल के लोगों की बड़ी आबादी के बावजूद भारतीय पर्यटक बहुत कम फ़िजी आते हैं। यहाँ पर्यटन के लिए आनेवालों में ज़्यादातर आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, जापान और अमेरिका के होते हैं। फ़िजी के दर्शनीय समुद्री तटों और द्वीपों पर होटल व्यवसायियों ने क़ब्ज़ा कर रखा है। होटल वालों ने प्रायवेट बीच बना रखे हैं जो सिर्फ़ होटल में निवास करनेवाले पर्यटकों के लिए सुलभ हैं। हमारा होटल वायलोआलोआ बीच पर स्थित था। वायलोआलोआ का मतलब काला पानी होता है। काली रेत होने के कारण पानी का रंग गहरा स्लेटी है। नातंडोला फ़िजी का सबसे बड़ा और खूबसूरत बीच है। गुजरातियों की फ़िजी में बहुत समृद्ध आबादी है। ये लोग

# रिपोर्ट – भारत से

गिरमिटिया के रूप में नहीं बल्कि व्यवसायी के रूप में यहाँ आए थे। इनकी भी दूसरी और तीसरी पीढ़ी व्यापार संभाल रही है। जो गिरमिटिया मज़दूरी करने आए उनमें से कई भारत इसलिए नहीं लौट सके कि उनके पास किराये तक की पूँजी नहीं थी। आज वे अपने पूर्वजों की भूमि तक से परिचित नहीं हैं। जबकि व्यवसाय से जुड़े भारतीय अपने राज्य और समाज से गहरा जुड़ाव रखते हैं। शादी विवाह जैसे पारिवारिक आयोजनों में दोनों तरफ़ से आवाजाही निरंतर बनी हुई है। फ़िजी के कुछ इलाक़ों में समृद्ध भारतीय व्यवसायियों से ईर्ष्या और द्वेष की भावना भी देखी जाती है। एक स्थानीय व्यवसायी ने बताया कि भारत के लोग सामने और पीठ पीछे एक जैसा बर्ताव नहीं करते जबकि यहाँ के मूल निवासी सहज विश्वासी और अपनी बात पर अडिग रहते हैं। मूल फ़िजी समाज और भारतीय मूल के फीजियों के बीच भाईचारे की स्थिति है। मूल फीजियों में सामाजिक खुलापन अधिक है। नैतिकता के बंधन उतने कड़े नहीं हैं। जबकि भारतीय मूल के लोगों में नैतिक बंधन अभी भी काफी कठोर हैं। यही कारण है कि भारतीय मूल के लोग स्थानीय फीजियों से एक सांस्कृतिक दूरी बरतते हैं। बावजूद इसके एक ही फ़िजी परिवार में एक साथ हिन्दू, मुसलिम और ईसाई धर्म का पालन करने वाले सहजता से मिल जाएँगे।

फ़िजी के स्कूलों और कॉलेजों में हिन्दी के प्रति रुझान कम हो रहा है। फ़िजी में भारतीय मूल के लोगों की चौथी पीढ़ी तक के लिए हिन्दी अपने पूर्वजों की संस्कृति और संस्कारों से जुड़ाव की भाषा रही, पर अब उसे रोज़गार और कैरियर से जोड़ कर देखा जाने लगा है। सम्मेलन के एक स्टॉल पर रिया ऋषिका से मुलाक़ात हुई। वह बीएड द्वितीय वर्ष की छात्रा है। अपनी संस्कृति और संस्कारों से गहन लगाव की भावना के चलते उसने हिन्दी विषय में स्नातक करने का निश्चय किया। रिया को उनकी निरक्षर माता ने हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। रिया की माता गृहिणी हैं और पिता इलेक्ट्रीशियन। रिया की शिक्षिका सुभाषिनी लता ने बताया कि अब भारतीय अभिभावकों की रुचि बच्चों को हिन्दी पढ़ाने में नहीं रही। उन्होंने बताया कि फ़िजी में विद्यार्थियों को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर एक विषय के रूप में हिन्दी चुनने का विकल्प दिया जाता है। फ़िजी के तीनों विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी पढ़ाई जाती है। फिजी के दूसरे बड़े महानगर लौतोका में गिरमिट संस्कृति केंद्र की स्थापना फ़िजी में गिरमिटियों के आगमन की एक शताब्दी पूरी होने पर 1979 में की गई थी। काउंसिल की स्थापना में हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों की संस्थाओं ने सामूहिक रूप से सहयोग दिया है। 1981 में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने इस केंद्र का उद्घाटन किया था। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि गिरमिटिया मज़दूरों के जीवन से जुड़ी कोई स्मृति संग्रहित नहीं है। केंद्र के सचिव ने बताया कि यह केंद्र दोनों देशों की सरकारों की उपेक्षा का शिकार है। यह केंद्र फ़िजी गिरमिट काउंसिल के द्वारा संचालित है जिसकी स्थापना केंद्र के सचिव की ज़िम्मेदारी संभाल रहे तमिल भाषी सेल्वा नंदन ने शुद्ध हिन्दी में बताया कि उन्होंने केंद्र को उसके उद्देश्यों के अनुरूप विकसित करने के लिए अनुदान हेतु फ़िजी और भारत की सरकारों को कई बार लिखा पर उनके पत्रों की नोटिस तक नहीं ली गई। नंदन जी बताते हैं कि केंद्र के लिए आबंटित ज़मीन का बड़ा टुकड़ा विकास की राह देख रहा है।

फ़िजी के गिरमिटियों का कष्ट अभी कटा नहीं है। अभी भी निम्न-मध्य आय वाले भारतीय फीजियों की आबादी अधिक है। अभी तक भाषा और संस्कृति के जतन से अपनी जड़ों से जुड़े होने का गर्व और गौरव भाव जो पिछली पीढ़ी तक बना आया था वह नई पीढ़ी से नदारद होता जा रहा है। गिरमिटिया देशों में विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन का सांस्कृतिक महत्व अधिक है। ये

ज़्यादातर छोटे देश हैं। इन देशों की भारतीय मूल की आबादी में भारत अपनी भाषा और संस्कृति का प्रचार सहजता से कर सकता है। यहाँ के विद्यार्थियों को भारतीय शैक्षिक संस्थानों में अध्ययन एवं शोध के लिए फ़ेलोशिप का विशेष प्रावधान किया जा सकता है। एक स्थानीय फ़िजी अध्यापिका ने बताया कि भारत सरकार फ़िजी को कई तरह की मदद देती है। भारत को अपनी मदद के दायरे में भाषा और संस्कृति को भी लाना चाहिए। भाषा और संस्कृति से जुड़े विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थाओं के लिए भी ठोस मदद की जानी चाहिए। ऐसा कर के भारत गिरमिटिया देशों की नई पीढ़ी में अपने मूल वतन के प्रति प्यार और सम्मान की भावना जगाई जा सकती है। विश्व की पाँचवीं महाशक्ति की दहलीज़ पर खड़े भारत को अपने सॉफ़्ट पॉवर पर भी ध्यान देना होगा। फ़िजी, मॉरीशस आदि भारतीय मूल की आबादी वाले देशों में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के विकास के लिए विशेष पैकेज का प्रावधान करना चाहिए। भूलना नहीं चाहिए कि महाशक्तियाँ अपनी भाषा और संस्कृति के फैलाव के लिए हरसंभव प्रयास करती हैं।

फ़िजी वासी लंबे समय से विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन की प्रतीक्षा कर रहे थे। कोरोना महामारी की वजह से आयोजन में विलंब हुआ। विश्व हिन्दी सम्मेलन का फ़िजी में आयोजन यहाँ के लोगों को न सिर्फ़ भाषा से जोड़ने में सहायक होगा अपितु भारतीयता की भावना को भी मज़बूत करेगा। यह आयोजन दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को नये आयाम देने में सहायक होगा। आयोजन के दौरान भारतीय फ़िजी भाइयों का उत्साह चरम पर था। लोग एक दूसरे से मिल रहे थे और अपने संपर्क नंबर साझा कर रहे थे। सभागृहों के भीतर से ज़्यादा बाहर का माहौल जीवंत था। सब एक दूसरे के साथ फ़ोटो खिंचाने और सेल्फ़ी लेने में व्यस्त दिखे। तीन दिनों में लोग एक दूसरे से ऐसे घुल मिल गए थे कि गले लग कर विदाई लेते लोगों की आँखें नम होने लगी थीं।

*********

**समीक्षक : संजीव जायसवाल 'संजय'**

संजीव जायसवाल 'संजय' बाल-साहित्य में बहुत बड़ा नाम हैं। उनके 13 कहानी-संग्रह, 12 उपन्यास और 29 चित्रकथाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके खाते में बड़े-बड़े सम्मान भी हैं, जिनमें उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान का 'बाल-साहित्य-भारती' और भारत-सरकार के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्मान भी शामिल हैं।

**संपर्क -** sanjeev59j@gmail.com, +91 73182 13943

# अरूणिमा - सुनहरे संसार की स्याह हकीकत

गगनचुंबी इमारतें, चमचमाती सड़कें, जगमगाती कॉलोनियाँ, इन्द्रधनुषी क्लब, स्वप्नलोक सा संसार। 'सिंगापुर' नाम सुनते ही जेहन में आकर्षक चित्र उभरने लगते हैं। सिंगापुर छोटा सा देश जिसने सफलता की बड़ी इबारतें लिखी हैं। शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे यह इन्द्रलोक अपनी ओर आकर्षित न करता होगा? शिक्षित, अशिक्षित, पेशेवर, गैरपेशेवर व कामगार सभी सुनहरे भविष्य की तलाश में सपनों की इस दुनिया की ओर खिंचे चले आते हैं। नागरिकता की आस में वर्तमान न्योछावर करने को कृतसंकल्प।

किंतु इस सुनहरे संसार के पीछे कितना अंधकार छुपा है, दूर से इसकी कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। विनाश की नींव पर ही विकास की मजबूत इमारत खड़ी होती है। अनगनित के सपनों को रौंदकर ही दूसरों के सपनों का संसार बस पाता है। इस शाश्वत नियम को अत्यंत सशक्तता से उद्घाटित किया है अप्रवासी रचनाकार रीता कौशल जी ने अपने नए उपन्यास 'अरूणिमा' में।

'रंग-बिरंगी बाल कहानियाँ', 'चंद्राकांक्षा' काव्य संग्रह और 'रजकुसुम' कहानी संग्रह के पश्चात रीता कौशल जी के उपन्यास 'अरूणिमा' में एक नया ही चेहरा नजर आता है। जहाँ वह एक के बाद एक क्रमबद्ध तरीके से अनेक चेहरों को बेनकाब करती नज़र आती हैं। उपन्यास पढ़ते समय कई बार जेहन में यह बात उभरती है, काश इस उपन्यास को पढ़ा न होता। कम के कम सपनों की दुनिया में सैर करने का सपना तो न टूटा होता! किंतु हकीकत से मुँह मोड़ना भी एक नैतिक अपराध है। इस दृष्टि से रीता कौशल बधाई की पात्र हैं कि उन्होंने तस्वीर का दूसरा पहलू सबके सामने रखने की हिमाकत या कहें हिम्मत की है। तराजू के दोनों पलड़ों को देख कर ही कोई निर्णय लिया जाना चाहिए, वरना मायावी महल में दुर्योधन की तरह भूतल पर कदम रखने के भ्रम में सरोवर में जा गिरने का खतरा सदैव बना रहता है।

इस उपन्यास की शुरुआत एक नि:संतान अध्यापक द्वारा अपनी साली की पुत्री को गोद लेने से होती है। कालांतर में उस दम्पति के अपने दो पुत्र होते हैं, और उनके जन्म के बाद उन अध्यापक की मृत्यु हो जाती है। ऐसे में उनकी विधवा को गोद ली गई 'अरूणिमा' बोझ और अपशकुनी लगने लगती है। फिर शुरू होता है उपेक्षाओं का दौर, और सामने आती है एक साधारण परिवारिक उपन्यास की पृष्ठभूमि। किंतु जल्द ही इस पृष्ठभूमि पर तैयार होती है एक असाधारण कथानक की नींव।

अरूणिमा को एक एजेंट के माध्यम से हाउस-हेल्पर के रूप में काम करने के लिए सिंगापुर भेजने का निर्णय लिया जाता है। आम

# समीक्षा– ऑस्ट्रेलिया से

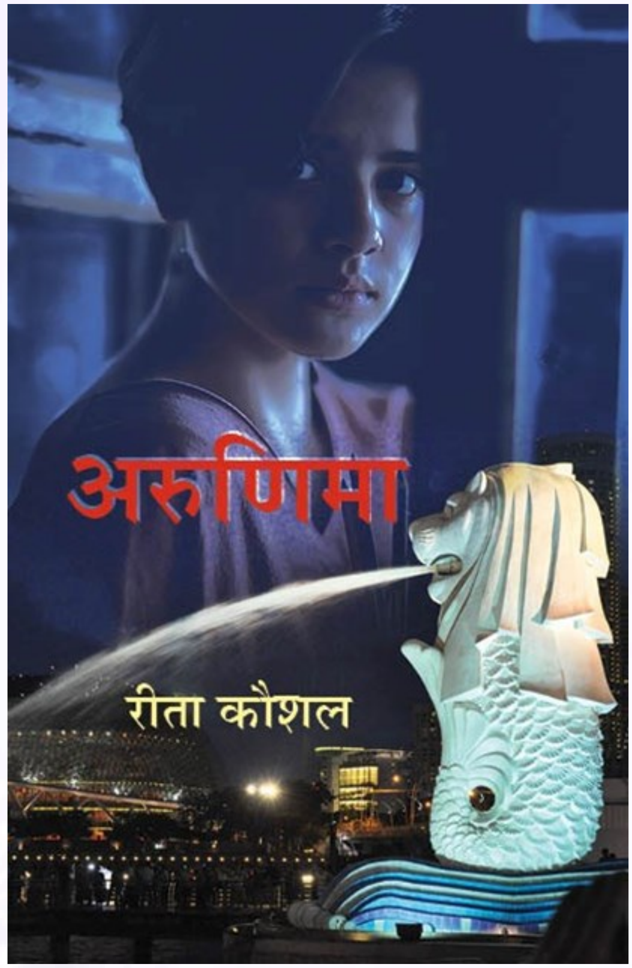


आदमी यही जानता है कि कामगार विदेश पहुँच कर ढेरों डॉलर कमा कर घर भेजने लगता है। किंतु 'जो तार से निकली है वो धुन सबने सुनी है, जो साज़ पे गुजरी है वो किस दिल को पता है।' फाकामस्ती से डॉलर तक की यात्रा में कितने काँटे बिछे हैं, यह 'अरूणिमा' से बेहतर कोई और नहीं समझ सकता। पहले विदेशी घरों में काम करने की ट्रेनिंग के नाम पर नर्क से भी बदतर स्थानों में महीनों मुफ्त का काम करना। खर्चों और कमीशन के नाम पर छह माह से लेकर साल भर तक की तनख्वाह पर एजेंटों का कब्जा। सिंगापुर पहुँच काम तलाशने के नाम पर महीनों 'मेड-एजेन्सियों' की बेगार। जिस घर में काम मिला वहाँ हँसने-खुश होने की बात तो दूर, किसी से बात करने पर भी प्रतिबंध रहते हैं। हाड़-मांस के रोबोट से ज़्यादा हैसियत नहीं होती 'मेड' की। उस पर हर पल मालिकों द्वारा वर्क-परमिट खत्म कर देने और ब्लैक-लिस्ट हो जाने का तनाव।

'अरूणिमा' के माध्यम से लेखिका ने सिंगापुर में रहने वाले विदेशियों की ज़िंदगी में अत्यंत सावधानी से झाँका है, और वे उनकी कड़वी सच्चाई को सबके सामने लाने में सफल रही हैं। शायद इसका सबसे बड़ा कारण है कि लेखिका स्वयं आस्ट्रेलिया में बसने से पूर्व कई वर्षों तक सिंगापुर में भी रही हैं। उन्होंने कानों से सुना ही नहीं, बल्कि अपनी आँखों से सब कुछ देखा है। इसीलिए वे मलेशिया के एक प्रांत से अलग हो सिंगापुर के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विकसित होने की कहानियों, वहाँ की नागरिकता मिलने में होने वाली दुश्वारियों, आगन्तुकों द्वारा अपना घर खरीदने की जटिलताओं, नियंत्रण के चलते नागरिकों द्वारा अपनी खुद की कार खरीदने की असमर्थताओं आदि तमाम बातों का इस उपन्यास में क्रमबद्व तरीके से चित्रण करती चलती हैं।

इसके साथ ही चलती रहती है दो भारतीय परिवारों, अर्णव-रिया तथा निराली-अनुराग की कहानियाँ। जिनके माध्यम से लेखिका ने भारतीय समाज और सिंगापुर के कल्चर को अत्यंत सशक्त ढंग से उकेरा है। सिंगापुर में बसे 'लिटिल-इंडिया' का बहुतों ने नाम सुना होगा। इंडिया से गई मेड का काम करने वाली युवतियों के माध्यम से, इस 'लिटिल इंडिया' का भी इस उपन्यास में पाठकों से अच्छी तरह परिचय करवाया गया है।

इन मेड्स का हर छमाही मेडिकल टेस्ट करवाया जाता है। किसी से शारीरिक संबधों की बात उजागर होने या गर्भवती होने पर उनका वर्क-परमिट कैंसिल कर, उन्हें फौरन सिंगापुर से वापस भेज दिया जाता है। अरूणिमा गूँगी गुड़िया की तरह वर्षों तक एक

# समीक्षा– ऑस्ट्रेलिया से

घर से दूसरे घर में काम कर पैसे अपने घर भेजती रहती है। चरित्रवती पर कई बार गृह स्वामिनियों द्वारा चरित्रहीन होने का लांछन भी लगाया जाता है। खून का घूँट पीकर वह सब सहती रहती है। अंत में एक छलिया के सम्पर्क में आकर वह प्रकृति से पराजित हो घुटने टेक देती है, और गर्भवती हो जाती है। उसके वर्तमान मालिक जो बहुत अच्छे हैं, और वे इतनी अच्छी मेड को खोना नहीं चाहते। वे उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिलवाना चाहते हैं, किंतु अरूणिमा उस अनचाही संतान को पूर्ण मनोयोग से जन्म देना चाहती है और इंडिया वापस आने का निर्णय ले लेती है।

अरूणिमा के इंडिया से सिंगापुर जाने और वापस आने की यात्रा के बीच रीता कौशल जी ने कई अन्य कहानियों और प्रसंगों को अत्यंत कुशलता से उपन्यास के कथानक में पिरोया है। जिससे सिंगापुर के जनजीवन को समझने में काफी मदद मिलती है। नियोक्ता द्वारा लंबी अवधि के लिए बाहर जाने पर अपनी मेड को किसी परिचित से साझा कर कुछ बचत कर लेने के लालच पर होने वाली कानूनी समस्याओं का चित्रण हो या प्रभावशाली नियोक्ताओं द्वारा मेड से जबरन अतिरिक्त कार्य करवाने पर चलने वाले मुकदमों की पैरवी, इन सबका मुख्य पात्रों से इतर कुछ अन्य पात्रों की कहानियों के माध्यम से चित्रण किया गया है। किंतु यह सब इतनी कुशलता के साथ गूँथा गया है कि सब कुछ मुख्य कथानक का भाग ही लगता है। इस कौशल के लिए रीता कौशल जी की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है।

रीता कौशल जी का यह पहला उपन्यास है किंतु इसका फलक काफी व्यापक है। भारतीय कामगारों के साथ-साथ वे फिलीपींस और इंडोनेशिया के कामगारों के माध्यम से उनके समाज, संस्कृति और चरित्र की झलक भी बीच-बीच में दिखलाती चलती हैं, जो पाठकों के लिए अतिरिक्त बोनस के समान है। इस उपन्यास की एक विशेषता यह भी है कि इसके अधिकांश खल-पात्र, चाहे वो इंडिया से विदेश भेजने वाला एजेंट हो या सिंगापुर में काम दिलाने वाली मेड एजेंसी की संचालिका, उनकी भी अपनी-अपनी मजबूरियाँ, विवशताएँ और सीमाएँ कथानक में दर्शायी गई हैं। इन सबका पक्ष देखने के बाद पाठक चाह कर भी इनसे नफरत नहीं कर पाता है। ज़्यादातर बुरे इंसानों में भी कुछ अच्छाइयाँ होती हैं और अच्छा इंसान भी कई बार परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देता है। इस इंसानी प्रवृत्ति को लेखिका ने अत्यंत सशक्त ढंग से पाठकों के समक्ष उकेरा है।

उपन्यास की भाषा सहज, सरल और सरस है। शैली अत्यंत प्रभावशाली है तथा कथानक रोचक होने के साथ-साथ उत्सुकता भी जगाए रखता है। इसी कारण पाठक उससे बँधा रहता है। बस एक बात अखरती है कि उपन्यास उसकी नायिका अरूणिमा की कहानी से शुरू होता है, फिर सिंगापुर में अर्णव-रिया तथा निराली-अनुराग की कहानी को प्रमुखता देने लगता है। अरूणिमा को पुनः महत्ता और प्रमुखता काफी बाद में मिलती है लेकिन बेहद सशक्त ढंग से मिलती है। फिर भी मुझे लगता है कि 'अरूणिमा' को कुछ और फुटेज मिला होता तो शायद ज़्यादा अच्छा होता।

कुल मिलाकर यह एक सशक्त उपन्यास है, जो भारतीयों के साथ-साथ अप्रवासी भारतीयों की ज़िंदगी की बहुत गइराई से पड़ताल करता है। मुझे विश्वास है कि अपनी इस विशेषता के कारण यह उपन्यास भारत के साथ-साथ विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के हिंदी प्रेमियों में भी लोकप्रिय होगा। मैं इस उपन्यास की सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

पुस्तक का प्रकाशन प्रतिष्ठित 'प्रभात-प्रकाशन' ने किया है।

200 पेज के हार्डकवर वाले इस उपन्यास की प्रिंटिंग अत्यंत उत्कृष्ट ढंग से की गई है तथा अपने गेटअप के चलते प्रथम दृष्टि में ही पाठकों को आकर्षित करने में सक्षम है।

*******

**उपन्यास का नाम :** अरुणिमा

**लेखिका:** रीता कौशल, पर्थ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया

**प्रकाशक:** प्रभात प्रकाशन

**पृष्ठ संख्या**: 200

पुस्तक अमेजन, फ्लिप कार्ट  और प्रभात-प्रकाशन की वेबसाइट पर उपलब्ध है-

**अमेजॉन लिंक:**

https://www.amazon.in//hi/dp/939201306X/ref=sr_1_1?crid=251JBG2X45TPP&keywords=arunima+rita+kaushal&qid=1665482301&sprefix=arunima+rita+kaushal+%2Caps%2C424&sr=8-1

**फ्लिपकार्ट लिंक:** https://www.flipkart.com/search?q=arunima%20rita%20kaushal%20

**प्रकाशक वेबसाइट लिंक:** https://www.prabhatbooks.com/arunima.htm

**सुधा ओम ढींगरा, अमरीका**
ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की उपाध्यक्ष और सचिव सुधा ओम ढींगरा जी 'विभोम-स्वर' पत्रिका की प्रमुख सम्पादक होने के साथ ही, 'शिवना साहित्यिकी' की संरक्षक एवं सलाहकार सम्पादक भी हैं। उपन्यास, कहानी, कविता समेत कई विधाओं में सुधा जी की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और इन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है।
**संपर्क -** sudhadrishti@gmail.com

# और बाड़ बन गई.....

" साथ वाले घर के सामने सामान ढोने वाला ट्रक खड़ा है | लगता है नए पड़ोसी आ गए हैं | " घर में प्रवेश करते ही मनु ने कहा |

यह सुनते ही मेरी उनींदी आँखें पूरी तरह से खुल गईं | मैं रसोई में सुबह की चाय बना रही थी और पूरी तरह से सचेत नहीं हुई थी | सुबह जब तक मैं एक प्याला चाय का ना पी लूँ, चुस्त -दरुस्त नहीं हो पाती |

" क्या आप ने उन्हें देखा है ? " उँगलियों के अग्रिम पोरों से आँखों को मलते हुए मैंने पूछा |

"नहीं सिर्फ सामान ढोने वाले देखे हैं |" अखबार को पालीथिन के कवर से बाहर निकालते हुए मनु ने कहा और पालीथिन को रसोई का कचरा डालने वाले डिब्बे में डाल दिया |

सुबह उठते ही वे बाहर से अख़बार उठाने चले जाते हैं और मैं रसोई में चाय बनाने | अमेरिका में अख़बार भी कितने सलीके से ढकी होती है ताकि बरसात का पानी उसके काग़ज़ों पर असर ना डाल सकें |

अख़बार को थामें प्रांगण की ओर बढ़ते हुए मनु बोले -- " पारुल, आज चाय बाहर ही ले आना | मौसम बहुत सुहावना है | हवा में घुटन और तल्ख़ी नहीं है | वह हल्के से धीरे -धीरे बह कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है | गर्मियों में ऐसी सुबह के लिए हम तरस जाते हैं |"

जून माह अपने आरंभिक दौर में है | हमारे शहर सेनफोर्ड की गर्मी और सर्दी अमेरिका के अन्य शहरों से भिन्न होती है | हर ऋतु में ऐसा लगता है कि भारत में बैठे हैं सिर्फ पतझड़ को छोड़ कर | पतझड़ से कुछ सप्ताह पहले वृक्षों के पत्ते कई तरह के रंग बदलते हैं | यहाँ गर्मियों में वातावरण में बहुत नमी होती है | अक्सर रात भर तड़पती पवन सुबह भी घुट -घुट कर साँस लेती है | कल रात तापमान कुछ कम हुआ था | आज की सुबह शीतलता ले कर आई है, जान कर अच्छा लगा | मैंने फटा- फट चाय बनाई और बिस्कुट ले कर बाहर आहाते में चली गई | वातावरण में घुटन तो है | पर वह महसूस नहीं हो रही | पड़ोसी कौन है ? कैसा है ? इसका कौतुहल अधिक है | मेरी तरह मनु भी चाय पीते हुए साथ के घर की तरफ अधिक देख रहे हैं | हमारे प्रांगण से हमारी बगल वाले १०४ नम्बर घर का पिछवाड़ा, भीतर के कुछ कमरे, रसोई, उसके साथ लगा सनरूम नज़र आते हैं | हलचल बहुत है | सामान ढोने वाले काम कर रहे हैं | वे कभी सोफा और कभी कुर्सियाँ ला रहे हैं | घर का प्रवेश द्वार छोटा है और पीछे का दरवाज़ा बड़ा | वे सारा सामान पिछले दरवाज़े से भीतर ले जा रहे हैं | हम दोनों जहाँ बैठे हैं, हमारे पास से ही निकल कर जाते हैं | वह घर कुछ इस तरह से तिरछा बना है कि उस घर का पिछला भाग हमारे आहाते की हद तक आता है | पड़ोस के पिछवाड़े में कोई बगीचा नहीं, बस बड़ा बरामदा है | हमारे बाग़ की हरियाली ही साथ वाले घर की खिड़कियों से दिखाई देती है | मज़दूरों को निर्देश देने वाला कोई भी व्यक्ति नज़र नहीं आ रहा | हम दोनों के भीतर उत्सुकता बहुत बढ़ गई है | साथ वाले घर का मालिक कौन है ?

" एक प्याला चाय और पी जाए | माहौल बहुत ही बढ़िया है " मनु ने मेरी ओर देखते हुए कहा | माहौल और मौसम तो बहाना है

बाहर बैठ कर चाय पीने का | दरअसल मैं भी नए पड़ोसी को देखे बिना वहाँ से उठना नहीं चाहती थी | मैं चाय के बर्तन उठा कर रसोई में फिर से चाय बनाने चली आई | चाय का पानी केतली में डाल कर गैस पर रख ही रही थी कि मनु की आवाज़ कानों में पड़ी | वे किसी से बातें कर रहे हैं | मैं सब कुछ छोड़ कर बाहर की ओर तेज़ी से चल दी, लगा नए पड़ोसी से बात कर रहे हैं | अरे मनु तो दाईं तरफ १०० नम्बर वाले घर की ज़ीवा के साथ बतिया रहे हैं | वह कॉफ़ी , कुकीज़ और अखबार ले कर अपने आँगन में उसी घर की तरफ मुँह करके बैठ गई है, जिसे कुछ देर पहले हम देख रहे थे | जब से यह घर सेल पर आया था | ज़ीवा बेताब थी | कितने का घर बिक रहा है और कौन -कौन देखने आ रहा है, सारी जानकारी मुझ से लेना चाहती थी | सोचती थी कि मेरा घर बगल में हैं और मुझे सारी ख़बर होगी जैसे हर आने जाने- वाले को मैं देखती रहती हूँ | उसका घर थोड़ी दूर पड़ता है | कई बार उसे कहा भी ---" ज़ीवा मुझ से क्यों पूछती हो ? सेल की तख्ती पर रीयल एस्टेट एजेंट का मोबाईल नंबर है, कार्यालय का फ़ोन नंबर है | किसी को भी फ़ोन कर के पता कर लो |" ज्योंही ज़ीवा को पता चला कि घर बिक गया..... तो कौन आ रहा है उस घर में ? यह जानने की उसकी जिज्ञासा चरमसीमा तक पहुँच गई | मकान मालिक का पता नहीं चला उसे | तब से बेचैन घूम रही है |

हम भी तो उसी तरह बेचैन हैं, सोच कर मुस्करा पड़ी मैं और रसोई में लौट आई | पानी खौल रहा था | इलाइची और दाळचीनी पीस कर पानी में डाली | चाय पत्ती, दूध डाल कर चाय बनाई | बाहर जा कर बैठी ही थी कि ज़ीवा को अखबार सामने रख कर फिर वहीं देखते पाया | नए पड़ोसी कहीं नज़र नहीं आ रहे | बस मज़दूर इधर- उधर घूम रहे हैं |

" लगता है, पुरानी गृहस्थी है , कितना सामान है |" मनु मेरे इस प्रश्न का उत्तर नहीं देते और ख़ामोशी से चाय पीते हुए कनखियों से उस घर की ओर देखते रहते हैं |

शनिवार का दिन है यानि छुट्टी | बाकि दिनों की अपेक्षा इस दिन दिनचर्या बहुत धीमी गति से चलती है | सिर्फ चाय की गति तेज़ है, तीन प्याले पी चुके हैं हम | जिनको देखने के लिए पी रहे हैं, वे नज़र नहीं आ रहे | वहाँ से उठने का मन नहीं कर रहा | वृक्षों की ओट से निकल कर सूर्य अब हमारे सामने आ खड़ा हुआ है | उठना मजबूरी हो गई है | तापमान बढ़ना शुरू हो गया है | ज़ीवा भी अपना सामान उठा कर अपने घर के भीतर चली गई |

सारे घरों के अग्रिम भाग और पिछवाड़ों के आहातों की हदें आपस में मिली हुई हैं | एक तरफ के ड्राईवे कुछ दूरी तक घरों को अलग करते हैं बाद में सब के अहाते आपस में मिल जाते हैं | कहीं कोई बाड़ नहीं |

भारत में चारदीवारी बनाना आम बात है | घरों के इर्द- गिर्द ऊँचीं दीवारें और लोहे के बड़े -बड़े गेट बनवाने का चलन है | इससे लोगों की निजता की रक्षा होती है और बाहरी ख़तरों, चोरों आदि से भी सुरक्षा मिलती है | अमेरिका में चालीस -पचास वर्ष पहले लोग लकड़ी या लोहे की बाड़ घरों के पिछवाड़ों में बनाते थे | चारदीवारी बनाने का कोई रिवाज़ नहीं था | घर के आगे अहाता खुला ही होता था | वहाँ किसी तरह की कोई बाड़ नहीं बनाई जाती थी | जब से परिवार और समुदाय की भावना अमेरिका के लोगों में बढ़ी है, पिछवाड़े से बाड़ भी परगनों से समाप्त हो गई है | अब बाड़ के बिना घरों वाले एरिया को प्रमुखता दी जाती है | अमेरिकेंज़ सोचते हैं कि इस तरह के सब- डिविज़न में रहने से बच्चों में समुदाय की भावना आती है | पड़ोसियों के महत्त्व को समझा और महसूस किया जा सकता है | हमारे घरों के समुदाय की भी यही विशेषता है |

इसी भावना के अंतर्गत हमने यहाँ ज़मीन ले कर घर बनवाया था | १०२ नंबर का हमारा घर बन चुका था और हम तक़रीबन घर में स्थापित हो गए थे, जब साथ वाला १०४ नम्बर का घर बन कर पूरा होते -होते बिक गया था |

# कहानी – अमरीका से

उस दिन डोर बेल झनझना उठी थी | दरवाज़ा खोला तो सामने एक दक्षिण भारतीय दंपत्ति खड़ा था | रमेश एवं चित्रा महालिंगम कह कर उन्होंने अपना परिचय कराया था | हमारे पड़ोसी थे | पहचानने में देर नहीं लगी | बिल्डर ने उनके बारे में बताया था, उन्होंने ही १०४ नम्बर वाला घर ख़रीदा था | वे हमसे मिलने आए थे | अमेरिका में भारतीय का पड़ोसी होना वरदान लगा था |

मनु की नौकरी के सिलसिले में अमेरिका के बहुत से शहर देखे हैं | हर स्थान पर अच्छे पड़ोसी मिले | सब अमेरिकंज़ थे | करीब जा कर भी कहीं ना कहीं उनमें औपचारिकता रहती है | अपनत्व की कमी खलती है हालाँकि दुःख- सुख के वे बहुत भागीदार होते हैं | हमेशा परिकल्पना करती थी कि अगर भारतीय पड़ोसी हो तो पड़ोस का सुख कैसा होगा ? वह सुख लेना चाहती थी, उन अनुभवों को जीना चाहती थी | मुझे उस का मौका मिल गया था | पहले दिन से ही चित्रा और रमेश के स्वभाव ने हमारा दिल जीत लिया था | कुछ दिनों के भीतर ही उनके दो बच्चे, हमारे दो बच्चे और ज़ीवा का बेटा आपस में खेलने लगे | कभी घर के पिछवाड़े में और कभी घरों के सामने सड़क पर | ज़ीवा का घर हमसे कुछ महीने पहले बना था |

हमारे प्रतिवेश का एक ही गेट है | सारे घरों की सड़कें गोल चक्कर खा कर बन्द हो जाती हैं | जिन्हें कल -डी- सैक कहते हैं | हमारे घर भी उसी पर हैं | बच्चों का सड़कों पर खेलना सुरक्षित होता है | तीनों घरों में बच्चे धमाचौकड़ी मचाते | परगना के बच्चे भी हमारे यहाँ पर आकर हमारे बच्चों के साथ खेलने लगे थे | स्कूल के बाद बच्चों के शोर से वातावरण गुंजाएमान रहता | बच्चों के साथ -साथ हम तीनों परिवार भी करीब आ गए थे |

ज़ीवा यहूदी मूल की अमेरिकन है | संयुक्त परिवार में बहुत विश्वास करती है | जीवन मूल्य, परम्पराओं , अनुशासन और उसका बच्चों को पालने का तरीका हमसे बहुत मेल खाता है | हमारा उसके करीब जाना स्वाभाविक था | दस वर्ष हम तीनों परिवारों और बच्चों ने इकट्ठे बिताए | वह हमारी दिवाली और होली पर साड़ी पहन कर आती है और हम उनके रोश हशामः में सज- धज कर जाते हैं | समय की रफ्तार तेज़ है, इसका एहसास हमें तब हुआ जब बच्चे दूसरे शहरों के विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए चले गए | तीनों परिवार ख़ाली घोंसलों की तरह हो गए | दुःख- सुख बाँटते हम जीवन का आन्नद ले रहे थे कि अचानक एक दिन चित्रा ने बताया, उनकी कम्पनी ने तरक्की देकर उन्हें वर्जिनिया जाने का आदेश दे दिया है | कम्पनी यहाँ का उनका घर बिकवाएगी और वर्जिनिया में घर खरीदवा भी देगी | सुन कर ख़ुशी हुई | अमेरिका की गिरती अर्थव्यवस्था में उन्हें नौकरी में अच्छा सुअवसर मिल रहा था | पर झटका भी लगा | वर्षों का साथ छूट रहा था | दिल को समझा लिया | अमेरिका की जीवन शैली में यह आम बात है | दोस्ती कहीं जाएगी थोड़े ही | हाँ रोज़ का मिलना कम हो जायेगा |

घर बेचने वाली एजेंसी ने चित्रा -रमेश का घर बिक्री पर लगा दिया | बावजूद अमेरिका की आर्थिक मंदी के दो सप्ताह के भीतर ही उनका घर बिक गया | पर किसने ख़रीदा, बहुत गोपनीय रखा गया | मनु का विचार था कि आर्थिक मंदी के समय में किसी भारतीय ने ख़रीदा होगा और बैंक से लिए गए कर्ज़े की स्वीकृति और उसकी औपचारिकता तक गोपनीय रखा गया है | अमेरिका में भारतीय बहुत समृद्ध हैं | अमेरिका के आर्थिक उतार-चढ़ाव से उन को कोई अन्तर नहीं पड़ता | ज़ीवा सोचती थी, किसी यहूदी ने ख़रीदा होगा | वे भी भारत के पटेल और मारवाड़ियों जैसे व्यापारी होते हैं , सही समय और सही जगह पर तोल-भाव करने वाले | अमेरिका की आर्थिक गिरावट ने घरों की कीमतें बहुत कम कर दी हैं | निवेश करने वाले आज कल रियल एस्टेट में खूब धन लगा रहे हैं | खैर बहुत कुछ सोचते रहे पर हमें साथ वाले घर के गृह -स्वामी का पता नहीं चला |

किसी ने दरवाज़ा खटखटाया | मैं और मनु दरवाज़े की ओर लपके | सोचा नए पड़ोसी होंगे | ज़ीवा खड़ी थी |

" रुबिन ने बाहर ग्रिल पर खाना बनाया है | आप के रॉक गार्डन में दोपहर के भोजन का सामान रख दिया है | वहाँ वृक्षों की ओट में बहुत छाया है | गर्मी महसूस नहीं होगी | आ जाओ | छुट्टी का मज़ा लें |"

दरवाज़ा उड़का कर हम रॉक गार्डन की ओर चल दिये | मैं ज़ीवा की मंशा जान गई थी | वहाँ बैठ कर वह साथ वाले घर की हलचल, ड्राईवे और घर के अग्रिम भाग को देखना चाहती है | सामान ढोने वाले आँगन का फर्नीचर ले कर जा रहे है | तभी दो कुत्ते और तीन बिल्लियाँ उनके पीछे भागे | हमें देख कर कुत्ते भौंकने लगे और बिल्लियाँ मियांऊँ- मियांऊँ करने लगीं | कुछ देर तक वे हमारा मनोरंजन करते रहे फिर मज़दूरों के पीछे भाग गए |

" पारुल, ये लोग तो बाड़ बनाएँगे | दो कुत्ते और तीन बिल्लियों को कैसे अपनी हद में रखेंगे |" ज़ीवा ने चिंतित हो कर कहा |

" कहाँ लगाएँगे ? जगह ही कहाँ है ? हमारी सीमा को पार करके ही लगानी पड़ेगी और हमारे प्रतिवेश के कानून उसकी आज्ञा नहीं देंगे | ग्रिल वाली बाड़ अब कोई लगवाता नहीं | अदृश्य लगवायेंगे तो क्या फर्क पड़ता है | " मैंने लापरवाही में कहा |

" अजीब लोग हैं अभी तक नज़र ही नहीं आए |" रुबिन ने कहा |

ज़ीवा के चेहरे के भाव बता रहे थे कि उसके स्वाभिमान को बहुत चोट लगी है | उसे अभी तक पता नहीं चल पाया कि चित्रा-रमेश के घर में कौन आया है ? उसे वेस्टर्न एस्टेट्स ( हमारे सब- डवीज़न का नाम ) का मुफ्त का समाचार पत्र कहते हैं | जिसे हर घर की, हर ख़बर होती है |

किशोरावस्था में देखा करती थी, भारत में बहुत सी महिलाएँ दूसरों के बारे में जानने को उत्सुक रहती हैं, सोचती थी, शायद यह गली- मोहल्ले की मानसिकता है, पर अमेरिका आकर महसूस हुआ कि पूरी दुनिया में मानवीय प्रवृत्ति एक सी है | हाँ देश और परिवेश के अन्तर से अनुपात की मात्रा कम और अधिक हो सकती है |

ज़ीवा किसी को फ़ोन करने लगी और हमारा ध्यान एक दम सड़क की ओर चला गया | दो बड़ी काली वैन आकर रुकीं और उसमें से कुछ मैक्सिकन निकले | कामगार लग रहे थे | वे वैन में से सामान निकाल कर घर के भीतर ले जाने लगे | तभी फ़ोन से हट कर ज़ीवा ने रहस्योदघाटन किया कि किसी माफिया के मुखिया ने घर लिया है |

" सच " हम तीनों के मुँह से निकला |

" हाँ, नहीं तो इतनी गोपनीयता की क्या बात है ? नैंसी से बात हो रही थी | वह बता रही थी कि स्वागत मंडल की अध्यक्ष होने के नाते, हमारे सब- डिविज़न और पड़ोसियों की तरफ से नए पड़ोसी का स्वागत करने फूलों का गुलदस्ता, कुकीज़ और स्वागतीय कार्ड लेकर गई थी पर दरवाज़े पर कोई नहीं आया | बस बाहर से ही काम करने वालों को सब कुछ दे कर चली आई |"

" ज़ीवा हो सकता है कि अभी मकान मालिक आए ना हों |" मनु बोले | रुबिन ने भी 'हाँ' कह कर साथ दिया |

" काम करने वाले इतने क़रीने से और हर चीज़ स्थान पर कैसे रख रहे हैं ! कोई तो अंदर बैठा उन्हें निर्देश दे रहा है... और इतने ज़्यादा लोग काम करने वाले | हम सब ने एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरण किया है, मूवर्ज़ कभी ऐसा काम करते हैं ?" ज़ीवा ने अपना तर्क दिया |

सूर्य कहर बरपाने की मुद्रा में आ गया था | हम पसीने से तर- बतर हो रहे थे पर प्रसंग और जिज्ञासा उठने नहीं दे रही थी | गृह सज्जा विशेषज्ञ की चमचमाती मर्सेडीज़ आ कर रुकी | साथ ही खिड़कियों पर पर्दे और ब्लाईंडज़ लगाने वाले की कार | हम चुपचाप वहाँ से उठ गए, ज़ीवा की बात सही लगी |

# कहानी – अमरीका से

घर में बाहर से अधिक उमस महसूस हुई | शायद भीतर यह डर बैठ गया था कि अगर पड़ोसी माफिया का मुखिया निकला तो ?

मैं बार -बार खिड़की के पास जा कर उस घर को देखती हूँ | चैन उड़ गया है | खिड़कियों - दरवाज़ों पर ब्लाईंड लगने शुरू हो गए हैं |

" मनु इसका मतलब है कि दरवाज़े -खिड़कियों को पहले से ही नाप लिया गया था, तभी तो आज उन पर सब कुछ लगाया जा रहा है | पर इतनी जल्दी यह सब कैसे किया जा सकता है ? दो सप्ताह पहले ही तो घर बेचने के लिए रखा गया था |"

" शायद अथाह पैसा हो | प्राथमिकता पर काम करवा रहे हों | पैसा खर्चो तो क्या नहीं हो सकता | " मनु ने बात समाप्त करते हुए कहा |

" मनु यह भारत नहीं है, अमेरिका है | नाप पर जो सामान बनता है, उसे समय लगता है |" समझने की कोशिश में मैं कई बार खिड़की के पास गई | वहाँ से अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा | हमारी तरफ की खिड़कियों को ब्लाईंडज़ से बंद कर पर्दों से ढक दिया गया है |

" इतनी पर्दादारी किस लिए ? " मनु कुछ नहीं बोलते | मैं चिढ़ जाती हूँ | टी.वी लगाती हूँ | कौन बनेगा करोड़पति आ रहा है | कुछ देर देखती हूँ | वहाँ से उठ जाती हूँ | मन कहीं भी स्थिर नहीं हो रहा | एक अजीब सा सूनापन भीतर- बाहर महसूस हो रहा है | चित्रा- रमेश की कमी खल रही है |

"ऐसे पड़ोसी से क्या सुख मिलेगा ? जिसके आने से पहले ही बेचैनी हो गई | " सोचते हुए फिर खिड़की के पास खड़ी हो जाती हूँ | इस खिड़की से साथ वाले घर का अग्रिम भाग नज़र आ रहा है | सारे घर की बत्तियाँ जल गई हैं | खिड़कियाँ - दरवाज़ों को पूरी तरह से ढक दिया गया है, रौशनी फिर भी छन कर बाहर आ रही है | कई लोगों के हँसने की आवाज़ आई | उनका घर और हमारा घर बंद होने पर भी भीनीं - भीनीं सी आवाज़ हमारे तक पहुँची | इसका मतलब बड़ा परिवार है |

मनु भी अपनी किताब छोड़ कर मेरे साथ आ कर खड़े हो जाते हैं | साथ वाले घर में अब कोई नहीं बोल रहा | हँसते -हँसते सब चुप हो गए हैं | कौन सी भाषा वे बोल रहे थे, उसका पता नहीं चला | मन उचट गया, बोरियत ने घर कर लिया | मैं सोने चली जाती हूँ | थोड़ी देर बाद मनु भी सोने के लिए आ जाते है |

दोनों के मन में एक ही भाव धूम रहा है कि इतने गोपनीय पड़ोसी कौन हैं ?

रविवार की सुबह प्रतिदिन की अपेक्षा हम देर से उठते हैं | पूरे सप्ताह की थकान दूर करने के लिए एक ही दिन मिलता है | पर आज तो फ़ोन की लहराती स्वर लहरी ने उठा दिया | बिस्तर पर अलसाये से मनु बोले --"पारू यार, लोग क्यों भूल जाते हैं कि आज इतवार है ?" मेरा भी उठने का मन नहीं था | संदेश मशीन पर सन्देश शुरू होने दिया | ज़ीवा बोल रही थी --"उठो, आज सोने का दिन नहीं है | देखो, बाहर क्या हो रहा है | " हम ने उसके सन्देश पर ध्यान नहीं दिया और बिस्तर पर करवट बदल कर सोने की चेष्टा करने लगे | उसका सन्देश कानों में गूँजता रहा, बाहर की जिज्ञासा बनी रही | हम करवटें बदल -बदल कर सोने की कोशिश में आलसयता से लिप्त बिस्तर पर लोटते रहे |

तभी फिर फ़ोन की घंटी बजी, कानों के पर्दे फाड़ती महसूस हुई | ज़ीवा की आवाज़ थी--"अरे आलसियों! उठो | रॉक गार्डन में चाय नाश्ता लगा दिया है | देखो बाहर बाड़ बन रही है |"

# कहानी — अमरीका से

"बाड़" शब्द ने शरीर में  स्फूर्ति भर दी | हम बिस्तर से उठ कर शौचालय की ओर भागे | ज़ीवा और रुबिन पड़ोसी नहीं घर के सदस्यों की तरह हो गए हैं | दोनों परिवारों ने एक दूसरे को काफी अधिकार दिये हुए हैं | छुट्टी वाले दिन हम एक दूसरे को लंच या डिनर खिला कर ख़ुशी महसूस करते हैं | 'बाड़' के बारे में सोचते -सोचते मैं तैयार होने लगी |

दस मिनट में तैयार हो कर हम घर के मुख्य दरवाज़े से बाहर निकले | बरामदे से रॉक गार्डन की ओर जाते हुए हमने देखा नेचर्ज़ क्रिएशन नर्सरी का बहुत बड़ा ट्रक खड़ा है और उसके कामगार फुर्ती से बड़े -बड़े गमले जिनमें मध्यम कद वाले फाइकस के वृक्ष लगे हुए थे, साथ वाले घर की हद के भीतर कतार में दस-दस  फुट की दूरी पर रख रहे थे | हमारी तरफ से ड्राईवे पर बाड़ बना दी गई थी और आहाते की तरफ काम जारी है |  एक जैसे गमले और एक जैसे वृक्ष |

दृश्य  देख कर स्तब्ध रह गए | इतनी जल्दी कैसे सब इंतजाम किया? नए पड़ोसी की चालाकी और बुद्धिमत्ता को दाद देने को मन किया | हमारे परगना की नियमावली अनुसार आप को बाड़ बनाने के लिए बकायदा हमारे सब- डवीज़न के निर्देशक मंडल से लिखित अनुमति लेनी पड़ती है , वह भी पड़ोसियों की स्वीकृति के हस्ताक्षरित पत्र पर | यह मंडल चुनाव पद्धति से चुना गया होता है और बिना कारण के किसी भी तरह की बाड़ बनाने की इजाज़त नहीं देता | जिनके घरों में पालतू जानवर होते हैं, वे ग्रिल (लोहे की ) बाड़ की बजाए बिजली की अदृश्य बाड़ लगवाने लगे हैं |  पालतू जानवर के गले में एक पट्टा सा बाँध दिया जाता है और जब वह उस बाड़ की सीमा रेखा के पास जाता है तो हल्का सा उसे झटका लगता है | उसे अपनी हद का पता चल जाता है और वह फिर आगे नहीं जाता | इस तरह से घरों की सुन्दरता नहीं बिगड़ती | अमेरिका में घरों की बाहरी सुन्दरता का बहुत ध्यान रखा जाता है | हाँ आप अपनी निजता के लिए अपने घर की सीमा में जितने चाहें पेड़, फूल -पौधे लगा लें | यही साथ वाले पड़ोसी ने किया | बाड़ भी बना ली और किसी कानून का उल्लंघन भी नहीं किया |

हम नाश्ते के लिए रॉक गार्डन में जा बैठे | ज़ीवा और रुबिन  इंतज़ार कर रहे थे | मौन अभिवादन के बाद चाय, कॉफ़ी का प्याला और फ्रेंच टोस्ट पकड़ कर सब की आँखें बाड़ बनाने वालों पर ही स्थिर हो गईं |

" क्या दादागिरी है | साथ वाले अभी कल आए हैं | किसी से मिले नहीं, किसी ने उनकी सूरत नहीं देखी | पड़ोसियों से कोई आदान- प्रदान नहीं हुआ, वे अच्छे हैं या बुरे, जानने की कोशिश तक नहीं की और निजता के लिए बाड़ बनवा ली | " ज़ीवा बड़े रोष से एक ही साँस में बोली |

" ज़ीवा मुझे तुम्हारी बात सही लगती है | माफिया का ही व्यक्ति है जिसे किसी की कोई परवाह नहीं |" मैं भी गुस्से से बोली |

" पर ऐसे कैसे चलेगा ? कोई भी हो, पड़ोसियों से तो मिल- जुल कर चलना चाहिए | " रुबिन ने कहा |

" कम्पनियों ने अपना पैसा बचाने के लिए जब से लोगों को घर से काम करने की सुविधा दी है, लोग अन्तर्मुखी हो गए हैं | मिलना- जुलना कम हो गया है | अंतरजाल पर तो अनजानों से दोस्ती करेंगे और फेस बुक पर अपना भीतर -बाहर उड़ेल देंगे पर अपने रिश्तों और पड़ोसियों से परे रहेंगे, उनके लिए समय नहीं | उनसे प्राईवेसी चाहिए |" ज़ीवा रुष्टता से  बोली |

" कम्पनियों को क्यों दोषी ठहराती हो ? अंतरजाल ने लोगों को कम्प्यूटर से बाँध दिया है | हर चीज़ वहाँ  उपलब्ध हो जाती है | लोग घर बैठे शौपिंग करने लगे हैं | " रुबिन बोला |

" हाँ तभी तो समुदाय की भावना समाप्त होती जा रही है | अवसाद बड़ों के साथ -साथ युवा वर्ग को भी घेरने लगा है | दुःख -सुख में कंम्प्यूटर काम नहीं आता | अपने आते हैं , पड़ोसी आते हैं | लोग उन्हीं से दूर होते जा रहे हैं | " ज़ीवा अपनी धुन में बोलती गई |

# कहानी — अमरीका से

मैं दोनों की नोंक -झोंक सुनते हुए चाय पी रही थी | अभी तारो- ताज़ा नहीं हुई थी |

" बाड़ बनाने का कोई कारण तो हो, हमें सुबह उठ कर गमले देखने पड़ेंगे | पिछवाड़े का सारा प्राकृतिक दृश्य खराब कर दिया | " मनु बुदबुदाये |

" कारण तो वे दे देंगे, दो कुत्ते, तीन बिल्लियाँ | " रुबिन ने कहा |

" फिर अदृश्य बाड़ बनवाते | वृक्षों और गमलों वाली क्यों ? " मैं बिफर गई |

नेचर्ज़ क्रिएशन नर्सरी के मालिक अनिल गाँधी की कार हमारे ड्राईव के पास आ कर रुकी | हमें बाहर बैठे और बातें करते देख कर वह हमारे पास आ गया | हमारे कई घरों के अग्रिम भाग और पिछवाड़े की बागवानी अनिल ने की है और हमारा रॉक गार्डन भी उसी ने बनाया है |

" हेलो अनिल, तुम साथवाले घर के मालिक से मिले हो, कौन है वह ?" मैंने उसके पास आते ही प्रश्न किया |

" मैं नहीं मिला, सेक्रेटरी से ही बात हुई है |"

" सेक्रेटरी ! " हम तीनों के मुँह से निकला |

" हाँ, आप हैरान क्यों हुए ?" अनिल ने पूछा |

" हैरानगी की बात तो है, इतनी जल्दी एक जैसे गमले और पेड़ तुमने कैसे इकट्ठे कर लिए ? अभी तो घर ख़रीदा है साथ वालों ने | " बात को बदलते हुए मैंने कहा |

" जी जब कोई पैसा पानी की तरह बहाए तो कौन काम नहीं करेगा | उन्होंने एडवांस राशि ही बहुत दे दी थी |"

हम चारों ने एक दूसरे की ओर देखा | सब के मन में एक ही भाव आया --माफिया ?

" आप ऐसे क्यों देख रहे हैं ? कोई बात तो है | "

" अनिल गमलों को रखते समय तुम्हें हमारा ध्यान नहीं आया | सुन्दर प्राकृतिक व्यू ख़राब कर दिया है |" मैंने बात को टालते हुए गिला सा किया |

" मैडम, आपको बचा लिया है | ये लोग तो मैग्नोलिया अपनी सीमा में लगवाना चाहते थे | मुझे पता है कि एक दो सालों में मैग्नोलिया की जड़ें और पूरा का पूरा वृक्ष आप की हद में आ जाता | आप व्यू तो लेतीं पर सारी उम्र कुढ़ती रहतीं | अच्छा मैं चलूँ, मिलूँ नए पड़ोसी से बाकि पैसों का हिसाब करना है |"

" हमने तो अभी तक नए पड़ोसी को देखा नहीं, उसके बारे में कुछ पता भी नहीं चला | एक रहस्य बना हुआ है |" ज़ीवा ने मुँह बिचकाते हुए कहा |

" मैं अभी राज़ जान कर आता हूँ | मेरे लिए भी चाय बना लें | सुबह से चाय नहीं पी |" अनिल घास फलांगता सा साथ वाले घर की तरफ चला गया |

ज़ीवा चाय, कॉफ़ी और नाश्ते के बर्तन इकट्ठे करने लगी|

"अनिल के लौट कर आने तक मैं बेगल और क्रीम चीज़ ले कर आता हूँ | मनु तुम मसाला चाय बना लाओ | " रुबिन ने बर्तन उठाते हुए कहा |

मनु और रुबिन रॉक गार्डन को छोड़ अपने -अपने घरों की ओर बढ़ गए |

मैं और ज़ीवा वहीं कुर्सियों में ढीली -ढाली हो कर धंस गईं |

सामने वाले और सड़क पार के घरों के लोगों की जिज्ञासु आँखें काम करते हुए भी इधर साथ वाले घर पर ही टिकी हैं | किटी पर्ल फूलों को पानी देते हुए बार -बार बन रही बाड़ को देख रही है | डैनियल और मारग्रेट के बच्चे सड़क पर खेल रहे हैं, वे उनके साथ खेलते हुए, कई बार खड़े हो कर बाड़ को देखने लगते हैं |

रविवार के दिन हमारे परगना की मुख्य सड़क पर बहुत रौनक रहती है | हमारा रॉक गार्डन और साथ वाले घर का अग्रिम भाग मुख्य सड़क पर पड़ता है | सैर कर रहे दम्पत्ति और जॉगिंग कर रहे लोग बाड़ को देखने के लिए रुक जाते हैं |

# कहानी – अमरीका से

मैं आकाश को देख रही हूँ | बादलों ने चक्रव्यूह बना कर आज दिनकर को घेर लिया है | एक किरण बाहर नहीं निकलने दे रहे | वह अभिमन्यु सा चक्रव्यूह में रास्ता बनाने की कोशिश कर रहा है | बादल उसे पूरी तरह से ढक कर रोके हुए हैं | काले स्लेटी बादलों ने दिन को तक़रीबन गोधूली वेला में बदल दिया है | हवा घुट गई है | वृक्षों से बने छाते की ओट में बैठे हमारा दम घुटना शुरू हो गया | मनु एक खड़ा पंखा लगा गए हैं | उसकी हवा से थोड़ी राहत मिल रही है | बाड़ तेज़ी से बनती जा रही है | आस- पास के बगीचों की घास भी गर्मीं में तड़पती महसूस हो रही है सिर्फ कुछेक घरों की घास को छोड़ कर | डेमी और माईकल के यहाँ ज़ोईशिया घास लगी है, वह कड़कती गर्मीं में हरी होती है और सर्दियों में पीली | उसे पानी भी कम चाहिए होता है, बाकि सब के अहातों में घास प्यास से, गर्मीं से सूख रही है | घास को पानी दिया जा रहा है | स्प्रिंकलर चल रहे हैं..छुक-छुक .. शाँ..शाँ की आवाज़ बड़ी भली लग रही है | ज़ीवा और हमारे यहाँ भी स्प्रिंकलर चल पड़े हैं | उनकी हल्की - हल्की फुहारों से कुछ छींटें हम पर भी पड़ रहे हैं | बड़ा सुखद लग रहा है | डैनियल के बच्चे स्प्रिंकलर की फुहारों के साथ खेल रहे हैं, उसके छमाछम पानी में कूद रहे हैं |

उनका पानी में कूदना मुझे भारत अपने मायके के वेहड़े ( आँगन ) में ले गया | छम छम बरसात में भीगती, कूदती हुई नन्हीं बच्ची बन गई थी | पता नहीं चला, कब मनु और रुबिन आ गए | ज़ीवा के फ़ोन ने ध्यान तोड़ा | अतीत से वर्तमान में आ गई | वह नैंसी से बातें कर रही थी " बस थोड़ी ही देर में पता चल जायेगा कि कौन आया है इस घर में |"

अनिल को आते देख सब सचेत हो गए | ज़ीवा ने फ़ोन बंद कर दिया | अनिल चुप-चाप कुर्सी पर आकर बैठ गया | मनु ने चाय प्याले में डाल दी | रुबिन ने क्रीम चीज़ लगा बेगल उसके आगे बढ़ा दिया | बेगल का टुकड़ा मुँह में डालते हुए, चाय के घूँट के साथ वह बोला -" मालिक से तो नहीं मिला | सेक्रेटरी किमर्ली ने हिसाब कर दिया है | बस इतना जान पाया हूँ कि भारतीय है और बहुत बड़ा व्यापारी है | घर पर कम रहता है | अधिकतर देश- विदेश घूमता रहता है | व्यक्तिगत और अन्तर्मुखी है | किसी से मिलना-जुलना पसंद नहीं करता | इसीलिए घर में आने से पहले अपनी निजता की सुरक्षा के लिए सिक्यूरिटी सिस्टम, ब्लाईंड, पर्दे और बाड़ लगवा रहा है |"

"इतना ही व्यक्तिगत है तो परिवारों वाले इलाके में घर क्यों लिया ? किसी जंगल बियाबान में लेता तो प्राईवेसी ही होती| कितने लोग निजता ढूँढते उजाड़ पहाड़ों पर रहते हैं | चला जाता वहीं पर | हमारा पड़ोस क्यों खराब किया ? यहाँ क्या चोर- उच्चके रहते हैं जिनसे सुरक्षा चाहिए |" मैं अपने भावों को रोक नहीं पाई और बरस पड़ी .....

" मैं कितनी उत्साहित थी कि अब अगर फिर भारतीय पड़ोसी मिला तो जीवन में दोबारा से रस आ जायेगा | विदेशी धरती पर देसी पड़ोसी, सोच कर ही भीतरी भावनाएँ तरंगित हो रहीं थीं | सारी उमंगों पर पानी फेर दिया | यह भारतीय तो अमेरिकंज़ से भी दस कदम आगे निकला | "

भारतीय पड़ोसी की चाहत, मोह और उसे ले कर लिए गए स्वप्न चूरमूर हो गए |

मनु मेरे मन की व्यथा को समझ गए , सांत्वना देते हुए उन्होंने कहा " पारुल कई भारतीय अमेरिकंज़ को समझे बिना उनकी तरह बनने की कोशिश करते हैं, वे अमेरिकन बन नहीं पाते और भारतीय वे रहते नहीं | संभ्रमित हो कर रह जाते हैं | जो वे हैं नहीं वही बनने की कोशिश में सीमाओं का उल्लंघन कर जाते हैं | हमारा नया पड़ोसी भी उनमें से एक है | "

वृक्ष से टूटी हुई टहनी सा लुंजपुंज महसूस कर रही हूँ मैं | वहाँ बैठना अब मुश्किल हो रहा है.... और..... हमारे देखते ही देखते बाड़ बन गई.....

***********

**डॉ. उषा किरण, भारत**

तूलिका एवम् लेखनी पर समान अधिकार रखने वाली डॉ. उषा किरण लगभग चालीस वर्षों के अध्यापन अनुभव के साथ ही मेरठ कॉलेज में ललित- कला विभाग की विभागाध्यक्षा रह चुकी हैं। अनेक शहरों में आयोजित कला- प्रदर्शनियों में उनकी कृतियों को सराहा गया है। उनका एक कविता संग्रह, साझा-संग्रहों में रचनाएँ  और एक आत्म-कथ्यात्मक उपन्यास प्रकाशित है| वे अनेक लब्ध प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित व पुरस्कृत हुई हैं।

**संपर्क-** usha791957@gmail.com


# मायका

मायके जाने का  प्रोग्राम बनते ही उन दिनों
बेचैनी से कलैंडर पर दिन गिनते
बदल जाती थी चाल- ढाल
चमकती आँखों में पसर जाता सुकून,मन में ठंडक...!

मायके की देहरी पर गाड़ी रुकते ही पैर कब रुकते
गेट पर लटकती छोटी बहन, भाई को देख
दौड़ पड़ती...भींच लेती छाती में जोर से
होंठ हँसते बेशक पर आँखें बरसतीं
धूप और बारिशें एक साथ सजतीं...!

अम्माँ का नेह धीरे से आँखों से छलकता
तो ताता का दुलार मुखर हो उठता
आ गई....आ गई बेटी...कह लाड़ भरा हाथ
सिर पर रख हँस पड़ते उछाह से
भूल जाते उम्र के दर्दों और थकान को...!

भैया साथ लग जाता तो छुटकी तुरन्त
पर्स की तलाशी में लग जाने क्या राज ढूँढती
उस दिन डॉक्टर का पर्चा पढ़
खुशी से उछलती- कूदती भागी थी
मैं पकड़ती तब तक तो वो शोर मचा चुकी थी...
अम्माँ ने बहुत ममता से मुस्कुरा कर
धीरे से आँचल से आँखें पोंछीं
उस बार विदा में अम्माँ ने खूब अचार, और नसीहतें
साथ बाँधीं थीं...!!

जाने क्या था अम्माँ के आँचल और
उस आँगन की हवा में
साँसें जैसे खुल कर पूरी छाती में भर जाती थीं
चौगुनी भूख सीधे चौके में खींच ले जाती
क्या पकाया, क्या बनाया कह बेसब्री से कढ़ाई से सीधे
चम्मच भर खाते, आँखें बंद कर चटखारा लेते
आत्मा तृप्त-मगन हो जाती...!

फिर चकरघिन्नी सी घूमती हर कमरे की
हर अलमारी को खोल उसकी खुशबू साँसों में उतारती
अपनी संगिनी किताबों, डायरियों को
छाती से लगा चूम लेती
नए लिए कपों, सामानों पर बहुत ममता से हाथ फेरती

# कविता– भारत से

अरे वाह, ये कब लिया…कितना सुन्दर है
देखना, ये साड़ी अबके मैं ले जाऊँगी…!
अम्माँ कहतीं हाँ- हाँ और अबके अपना तानपूरा और बाकी सब भी साथ ले जाना…!

फिर मुड़ जाती अपने प्यारे से बगीचे में
तितली सी थिरकती…चिड़िया सी चहकती
हर फूल, हर पत्ती पर हाथ फेर दुलारती
करौंदे, नीबू, जामुन, अमरूद जो मिलता
गप से मुँह में डाल तृप्ति से मुस्काती…!

नहा- धोकर आँगन की सुनहरी धूप में
कोई किताब ले गीले बाल फैला चारपाई पर
इत्मिनान  से पसर कर भर आँख आसमान देखती
रात को तारों की झिलमिल में खोकर सोचती
अरे, तारे तो शायद वहाँ भी झिलमिलाते होंगे,कभी गौर नहीं किया
लम्बी साँसें भरती सोचती
यहाँ धूप कितनी सुनहरी है और हवा कितनी हल्की …!

यूँ तो काल के अंधेरे गर्भ में समय के साथ
बिला चुका है वो सब कुछ
लेकिन जब भी मेरी  बेटी अपने मायके आती है
मायके की धूप-हवा को तरसती मेरी रूह
उसके उछाह और सुकून में समा कर
गहरी- लम्बी साँसें चुपचाप भरती है…!!

**********

# कविता– भारत से

# वे

दो विपरीत  बहते छोरों को अचानक गठबंधन में।
बाँध दिया गया
ऐसे, जैसे कोई हादसा अचानक हो जाए

न प्यार था न परिचय
बस दो अजनबी...
न वो सूरज था न वो किरन
न वो दिया था न वो बाती।
न वो चाँद था और न वो चाँदनी
एकदम विपरीत थे वे दोनों...

एक शान्त तो दूसरी बेचैन
एक जमीनों पर पैर जमा कर रखता
तो दूसरी आसमानों में ऊँचाइयाँ नापती
तब भी चलते- चलते
एक दूसरे के रास्तों में आ जाते
यूँ ही भिड़ जाते...

पर साथ चलना तो तय था
धीरे-धीरे महसूस हुआ वे विरोधी नहीं
परस्पर पूरक थे एक दूजे के, तो फिर...
उसने जमीनें बाँटी थोड़ी
तो उसने भी अपने आकाश के
कुछ हिस्से उसके नाम कर दिए...

अब आख़िरी पड़ाव है
साँझ होने को है...
हैं तो आज भी वे बिल्कुल विपरीत
लेकिन लोग कहते हैं कि उनकी शक्लें अब
कुछ- कुछ मिलने लगी हैं...!

**********

**हेमा कृपलानी , सिंगापुर**

दो दशकों से भी अधिक समय से भारत से बाहर रह रही हेमा कृपलानी सिंगापुर में हिंदी शिक्षण से पिछले कई वर्षों से जुड़ी हैं| वे स्वतंत्र लेखिका, अभिनेत्री एवं कुशल प्रस्तोता भी हैं। देश-विदेश की कई पत्र-पत्रिकाओं में इनके आलेख प्रकाशित हो चुके हैं|

**संपर्क -** hkripalani@hotmail.com


# रिपोर्ट- विश्व हिंदी दिवस सिंगापुर – 2023

भारतीय उच्चायोग सिंगापुर के तत्वावधान में सिंगापुर संगम द्वारा 10 जनवरी 2023 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि रहे श्री शिवजी तिवारी भारत के सिंगापुर उच्चायोग (हाई कमीशन) में चांसरी प्रमुख के पद पर कार्यरत हैं। संगोष्ठी की संयोजिका सिंगापुर से डॉ. संध्या सिंह व वक्ताओं में डॉ. लतिका रानी, प्रतिमा सिंह जी, आराधना झा श्रीवास्तव जी के साथ कार्यक्रम का संचालन हेमा कृपलानी ने किया और ईश् पूजन और  धन्यवाद ज्ञापन पूनम चुघ द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. संध्या सिंह ने सभी वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया और संगोष्ठी का विषय बताया जो था, 'विश्व में हिंदी'।

इस विषय पर सभी वक्ताओं ने विश्व में हिंदी भाषा समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं और यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है जिसमें पठन-पाठन, शिक्षण के अलावा मीडिया, बॉलीवुड, तकनीकी विकास के साथ हिंदी भाषा का विकास हो रहा है, डिजिटल युग में हिंदी भाषा ने अपना स्थान प्राप्त किया है पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। सबसे पहले डॉ. लतिका रानी ने हिंदी भाषा को मनोरंजन व संगीत से जोड़कर अपनी बात दर्शकों के सामने रखी कि किस तरह हिंदी फ़िल्मों और गीतों के द्वारा हिंदी भाषा और संस्कृति विश्व में बहुत लोकप्रिय हो रही है। हिंदी फ़िल्मों के सुपरहिट गीत विश्व में बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं और वे विश्व में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने में मदद करते हैं। हिंदी भाषा को संस्कृति व त्यौहारों से जोड़ते हुए ऑनलाइन संगोष्ठी

# रिपोर्ट– सिंगापुर से

की दूसरी वक्ता प्रतिमा सिंह जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि भाषा के रूप में हिंदी भाषा की विकास यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया है। हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। तभी तो हम सब जानते हैं कि विदेशों में व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा द्वारा होती है। ये प्रवासी भारतीय अपने साथ हिंदी भाषा और संस्कृति भी साथ लेकर गए। यही कारण था कि विदेश की भूमि पर भारतीयों की पहचान हिंदी भाषा से होने लगी क्योंकि चाहे उनकी अपनी मातृभाषा भिन्न रही हो लेकिन विदेश में हिंदी भाषा ने उन्हें अपनों के करीब रखा। इसके बाद डॉ. लतिका रानी ने 'छठी मैया' का एक सुरीला गीत सुनाकर संगोष्ठी में चार चाँद लगा दिए।

हिंदी भाषा में महिमा भी है और गरिमा भी। इस डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य को अपना स्थान प्राप्त करने में सफलता भी मिल रही है। जहाँ आनलाइन पढ़ने के लिए किताबें, उपन्यास, पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। कई मोबाइल एप्प हिंदी के विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ा रहे हैं। हिंदी भाषा और साहित्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए संगोष्ठी की तीसरी वक्ता आराधना झा श्रीवास्तव जी ने। जिन्होंने बहुत खूबसूरती से कविताओं व छंदों द्वारा अपनी सुरीली आवाज़ में अपनी बात कही।
संगोष्ठी की चौथी वक्ता व संचालिका हेमा कृपलानी ने हिंदी भाषा की शिक्षिका होने के नाते अपने शिक्षण अनुभव व भाषा द्वारा सिंगापुर व चीन में शिक्षण व अनुवाद संबंधी कई मज़ेदार किस्से सुनाए जिसका दर्शकों ने खूब आनंद उठाया। उन्होंने बताया कि विदेश में रह रहे भारतीय बच्चों में हिंदी के प्रति रुचि जगाना और जगा कर रखना एक चुनौती है। हिंदी शिक्षण का एक वैश्विक स्तर नहीं हो सकता। कहीं वह मातृभाषा है, कहीं वह पितृ भाषा है, कहीं वह द्वितीय भाषा है, या विदेशी उसको पढ़ते हैं और इन सब वर्गों के लिए इसे ग्रहण करने का रूप सामान नहीं हो सकता।

इसी के साथ पूनम चुघ जी ने धन्यवाद दिया और सबको विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि आज का दिन ख़ास है और इसे इस संगोष्ठी में उपस्थित वक्तागण ने और ख़ास बना दिया है।

*********

**आराधना झा श्रीवास्तव, सिंगापुर**

सिंगापुर में प्रवास कर रही आराधना झा श्रीवास्तव, स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता से सम्बद्ध हैं। हिंदी एवं मैथिली में नियमित लेखन, प्रकाशन एवं सम्पादन-सहयोग कर रही आराधना, संवाद-नाटिकाओं के लेखन, निर्देशन एवं अभिनय के साथ-साथ गद्य एवं पद्य की विभिन्न विधाओं में लिखती हैं।

**संपर्क -** jhaaradhana@gmail.com

# रिपोर्ट- प्रवासी भारतीय दिवस-सिंगापुर 2023

7 जनवरी, 2023 को भारतीय उच्चायोग सिंगापुर, इंटरनेट में विश्व के पहले प्रकाशन का गौरव प्राप्त न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका भारत-दर्शन एवं भारत की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के सहयोग से संगम सिंगापुर हिन्दी संस्था द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस के उपलक्ष्य में एक ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संगम सिंगापुर हिन्दी संस्था की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. संध्या सिंह जी ने परम्परा के अनुसार कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से किया और देश-विदेश से आमंत्रित सभी प्रतिष्ठित प्रवासी साहित्यकारों एवं गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित सिंगापुर के माननीय भारतीय उच्चायुक्त श्री पी. कुमरन जी ने अपने उद्बोधन में प्रवासी भारतीय दिवस के विषय में कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ साझा की। वर्ष 1915 में 9 जनवरी के दिन ही महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटे थे और गांधी जी के भारत-आगमन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी थी इसीलिए 2003 से 9

# रिपोर्ट– सिंगापुर से

जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस के रुप में मनाने की परंपरा शुरु हुई। वर्ष 2015 में इसमें संशोधन करते हुए प्रत्येक दो वर्ष पर प्रवासी भारतीय दिवस के आयोजन का निर्णय लिया गया। वर्ष 2023 में मध्य प्रदेश के इंदौर में आयोजित 17वें प्रवासी भारतीय दिवस आयोजन का विषय चुना गया-'प्रवासी: अमृतकाल में भारत की प्रगति के विश्वसनीय भागीदार'। प्रवासी भारतीय दिवस के दिन भारत सरकार की ओर से माननीय राष्ट्रपति के करकमलों से अनिवासी भारतीय (एनआरआई) अथवा भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) को विदेशी भूमि पर भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए प्रवासी भारतीय सम्मान प्रदान किया जाता है। इस वर्ष सम्मानित हुई 27 विभूतियों में एक लंबे अंतराल के पश्चात् सिंगापुर का भी प्रतिनिधित्व रहा। भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी के द्वारा व्यापार श्रेणी में उत्कृष्ट योगदान हेतु 'डेवलपमेंट बैंक ऑफ़ सिंगापुर समूह (डीबीएस)' के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री पीयूष गुप्ता जी को प्रवासी भारतीय सम्मान प्रदान किया गया।

मुख्य अतिथि के उद्बोधन के बाद डॉ. संध्या सिंह जी ने सिंगापुर संगम पत्रिका के प्रवासी विशेषांक (जनवरी-मार्च अंक 2023) के आवरण चित्र को अपनी कूची से जीवंत करने वाली कलाकार अनामिका दत्ता जी को मंच पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित किया। अनामिका जी ने बताया कि माँ के साथ बैठे हुए बच्चे के माध्यम से उन्होंने भाषा और संस्कृति के वैश्विक प्रचार-प्रसार के भाव को दर्शाने का प्रयास किया है। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए संध्या जी ने संचालन दायित्व हेतु आराधना झा श्रीवास्तव को मंच पर आमंत्रित किया। कार्यक्रम में सम्मिलित सम्मानित अतिथियों में से किसी ने प्रवासी विशेषांक में प्रकाशित अपनी रचना का अंश पाठ किया तो किसी ने प्रवासी दिवस पर आधारित अपनी रचना का पाठ कर मंच की शोभा बढ़ाई। ब्रिटेन की प्रसिद्ध साहित्यकार दिव्या माथुर जी ने शीघ्र प्रकाश्य बाल उपन्यास 'बिन्नी बुआ का बिल्ला' से एक अंश पढ़कर सुनाया। प्रवासी साहित्य की यह धारा ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. मृदुल कीर्ति जी से प्रवाहित होते हुए रुस के डॉ. मक्सिम देम्चेंको तक जा पहुँची। ब्रिटेन से दिव्या माथुर जी एवं तेजेन्द्र शर्मा जी, डेनमार्क से डॉ. अर्चना पैन्यूली जी, नीदरलैंड्स से डॉ. रामा तक्षक जी, दुबई से पूर्णिमा वर्मन जी एवं डॉ. आरती लोकेश गोयल जी, ऑस्ट्रेलिया से रीता कौशल जी, रुस से डॉ. इंदिरा गाज़िएवा जी, मॉरीशस से कल्पना लालजी, न्यूज़ीलैंड से डॉ. पुष्पा भारद्वाज वुड जी एवं रोहित कुमार हैप्पी जी, सिंगापुर से अदिति अरोरा जी, विनोद कुमार दूबे जी एवं प्रतिमा सिंह जी समेत सभी आमंत्रित अतिथियों ने अपनी कविताओं, रेखाचित्र, आलेख, लघुकथा एवं दोहों के पाठ से साहित्यिक की आनन्द धारा प्रवाहित कर दी।

अपनी व्यस्तताओं के बावजूद कार्यक्रम को सानिध्य प्रदान कर रहे भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी जी ने प्रवासी भारतीय दिवस के संदर्भ में अपने विचार साझा करते हुए आयोजन हेतु संस्था के सभी सहयोगियों की प्रशंसा की और साथ ही, अपनी प्रतिनिधि कविता नींद कहाँ है का पाठ भी किया। कार्यक्रम की सहयोगी संस्था अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, भारत के मानद निदेशक श्री नारायण कुमार जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संगम सिंगापुर हिन्दी संस्था द्वारा प्रवासी भारतीय दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए 2003 में आयोजित प्रथम भारतीय दिवस में विदेश मंत्रालय में सलाहकार के रुप में अपने अनुभवों को साझा किया। विदेशों में

रहने वाले भारतीयों के साथ स्नेह और सद्भावनापूर्ण संबंधों को प्रगाढ़ता प्रदान करने के उद्देश्य से प्रवासियों के सांस्कृतिक दूत के रुप में प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष स्वर्गीय बालेश्वर अग्रवाल जी की प्रेरणा एवं अनुशंसा पर, डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी जी की अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति के द्वारा 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस के रुप में मनाने का प्रस्ताव रखा गया, जिसे भारत सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई। आराधना के आग्रह पर श्री नारायण कुमार जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन का समापन अस्ताचल गामी सूरज पर आधारित अपने कविता-पाठ के साथ किया और कार्यक्रम में उपस्थित सभी आमंत्रित अतिथियों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम की सहयोगी संस्था भारत-दर्शन के संपादक श्री रोहित कुमार हैप्पी जी ने मुख्य अतिथि महोदय, कार्यक्रम के अध्यक्ष, सानिध्य एवं आमंत्रित गणमान्य अतिथियों समेत आयोजन समिति के सभी सदस्यों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद-ज्ञापन की औपचारिकता का दायित्व-निर्वहन किया। डॉ. संध्या सिंह जी ने रोहित जी के प्रति धन्यवाद प्रकट करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

***************

**विनोद कुमार दुबे, सिंगापुर**

सिंगापुर में प्रवास कर रहे विनोद कुमार दुबे जी मर्चेंट नेवी में कप्तान के रुप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। HEP ( highly enriched personality) पुरस्कार, पब्लिक रिलेशन सोसाइटी भोपाल से प्रवासी साहित्य सम्मान तथा कविता के लिये सिंगापुर में इन्हें पुरस्कृत किया गया है। विनोद जी का एक काव्य-संग्रह और उपन्यास प्रकाशित हो चुका है।

**संपर्क -** vinod5787@gmail.com


# लड़कियाँ

कोई तो है जो देख रहा है,
इसका गुमान करते,
कोई ऐसे वैसे ना देख ले,
इसका डर आँखों से बयान करते,
बाहर से सादगी का रंग चढ़ाये,
भीतर हर मौसम को ओढ़े बिछाए ,
मैंने उन छोटे-छोटे शहरों में,
बड़ी मासूम सी लड़कियाँ देखी हैं....

पतझड़ और बसंत की उस मिलीभगत वाली शाम,
जब आर्ट्स फ़ैकल्टी की काली सड़क पर,
नारंगी पत्ते लहराकर गिर रहे हों,
सहेलियों का हाथ थामे यूँ गुजरती हैं,
जैसे तितलियों को आपस में गपियाना हो,
वहीं बेंच पर बैठे बैंगनी फूलों के इतने गुच्छे बनाती,
जैसे सारा बसंत अपने बालों में सज़ाना हो,

सर्दियों की ठंडी सुबह जब रज़ाई से कदम निकाल रही हों,
जैसे कटरे के दुकानदार शटर उठा रहे हों,
एक ही तरह का यूनिफ़ॉर्म पहने,
जाड़ों की नरम धूप सा चेहरा लिए,
सीधी फैक्ट्री से बनके निकली ये लड़कियाँ,
फुटपाथ की फर्श पर यूँ पैर रखती हैं,
जैसे किसी ने रूई के फ़ाहे से सड़कों पर पराग मल दिया हो,

फिर सर्दियों की काली सियाही सी शाम,
मुलझुलाती बत्तियों के सहारे,
जब सड़कें सोने की तैयारी में होती हैं,
स्कूल कॉलेज की थकान लिए,
उन्हीं सड़कों से घर को लौटती वो लड़कियाँ ,
एक हाथ से बैग और दूसरे से बाल संवारते,
यूँ चटर-पटर बातें उड़ाती चलती हैं,
जैसे उनकी बातों से जाड़ों के गुलाबी फूल झड़ रहे हों.....

गर्मियों में जब पारा भी आलस से उमसा रहा होता है,
सड़कों की उस धकेलती भीड़ में भी,
दिख जाती हैं ये लड़कियाँ,

# कविता— सिंगापुर से

अपने उसी फ़िरोज़ी स्टॉल से चेहरा ढके,
जिनपर बड़े बड़े कचनार के फूल छपे होते हैं,
और दोपहर बाद की तेज बारिश में,

यही लड़कियाँ सड़कों पर अँगड़ायी लेती हैं,
सावन की हवाओं में उड़ जाते हैं उनके बाल,
जैसे किसी ने अजीब सी कंघी से,
निकाल दिए हों अजीब सी माँग,
दोपहर तक उमस से बेहाल वही सड़कें,
बारिश में इनके रंग बिरंगे छाते लिए गुजरने भर से,
कचनार के फूलों की खुशबू से सराबोर हो जाती हैं।

पता नहीं कहाँ होंगी ,
अब ये छोटे शहरों की मासूम लड़कियाँ,
शायद डाँट रही होंगी कहीं अपनी बेटियों को,
बेधड़क चीखने पर, बारिश में भींगने पर,
बालों में फूलों का गुच्छा लगाने पर,
सड़कों पर चलते चटर-पटर बतियाने पर,
कायनात को मासूम लड़कियों की,
एक नयी खेप देकर,
शायद, वो खुद अब औरत बन गयी होंगी...

*************

**अदिति अरोरा, सिंगापुर**

बड़ौत उत्तरप्रदेश में जन्मीं अदिति अरोरा पिछले 26 वर्षों से सिंगापुर में प्रवासी हैं| भारत में दिल्ली और उसके आसपास के विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने के बाद सिंगापुर में हिंदी अध्यापन से जुड़ी हैं| हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में निरंतर लेखन और प्रकाशन कर रही हैं|

**संपर्क -** aditi.arora1965@gmail.com

# वशीकरण

पल भर में बदल जाते हैं मौसम चेहरे पर

क्षणभर में ले आता है मुस्कान वह अधरों पर

है आधिपत्य आजकल सर्वश्रेष्ठ सिंहासन पर

गर्व से विराजमान है सभी के फोन पर

इधर-उधर खड़े हो सेल्फी लेते हुए

दिखते हैं लोग आजकल अकेले भी मुस्कुराते हुए

ऐसे महानुभाव भी जो प्राय: त्योरियाँ चढ़ाए रहते हैं

वे भी कैमरे के जादू से वशीभूत हो मुस्कुरा देते हैं

दर्द और उदासी को हम अंदर छिपाकर

कैमरे के सामने से निकलते हैं मुस्कुराकर

जब जानते हैं हम कि मुस्कुराते हुए अच्छे लगते हैं

फिर क्यों नहीं खुल कर प्राकृतिक हँसी हँसते हैं

कैमरे के समक्ष क्षणिक कृत्रिम मुस्कान

क्यों बनती जा रही है हमारी पहचान

क्या याद है? कब खुलकर मुस्कुराए थे

या कब उन्मुक्त हँसी के ठहाके लगाए थे

होते जा रहे हैं दूर माँ प्रकृति से हम

बाँधते जा रहे हैं स्वयं को कृत्रिमता से हम

ईश्वर की अद्भुत कृति ये दो नयन बादाम से

हैं अधिक सक्षम इस मानव निर्मित कैमरे से

जादू की छड़ी को कुछ देर रखकर जेब में

मुस्कुरातें हैं देखकर आज इन आँखों में

मानती हूँ कि तस्वीर इंस्टाग्राम पर ना डाल पाएँगे

पर आँखों के कैमरे से सीधा हृदय में बस जाएँगे

कैमरे के वशीकरण से थोड़ा बाहर आते हैं

प्रकृति के मध्य चलिए प्राकृतिक हो जाते हैं

*******

# चलिए वसंत बन जाएँ

ऋतुराज वसंत जब आता है
जीवन, जीवंत हो जाता है
प्रकृति के विराट आँचल पर
सौंदर्य विस्तार पा जाता है
अमराई से आती मधुर ध्वनि
गूँजता कोयल का कूजन
पल्लवित सुगंधित पुष्पों पर
करते भँवरे अपना गुँजन
मुस्कुराती सरसों खेतों में
और हँसते पुष्करों में कमल
पतझड़ से नग्न हुए वृक्षों का
मधुमास कर देता शृंगार नवल
चलिए हम भी वसंत बन जाएँ
एक अनंत विस्तार हम पा जाएँ
ना रह जाए किसी भी हृदय में पतझड़
ऐसा कुछ हम कर जाएँ
मधुरता मधुमास में जैसे
माधुर्य हमारे कण्ठ में हो
झर-झर झरने सा अनवरत
एक प्रेम प्रपात हृदय में हो
खिलें खुशियों के सुमन दिलों में
बहे स्नेह की सुगंध हवाओं में
करुणा जल कभी भी शुष्क ना हो
नेत्रों के इन दो जलाशयों में
जहाँ कहीं भी हो हमारी उपस्थिति
वसंत ऋतु सी वहाँ हो प्रतीति
चलो प्रेम पुंज बनकर जी लें हम
जब तक धरा पर हैं अतिथि हम

************

**आलोक मिश्रा , सिंगापुर**

कानपुर में जन्मे आलोक मिश्रा पिछले बीस वर्षों से सिंगापुर में निवास कर रहे हैं| वे एक बहुराष्ट्रीय शिपिंग कंपनी में कार्यरत हैं| उनके कई साझा काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं| देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में काव्य की भिन्न विधाओं के साथ ही कहानी लेखन में भी सक्रिय हैं|

**संपर्क -** alok3400@gmail.com

# मोबाइल की खिड़की से...

मोबाइल की खिड़की से अब

दिखता है संसार।

पहले बातें कर लेते थे

लिख कर दिल की कह देते थे

किन्तु इमोजी तक अब सिमटा

शब्दों का भंडार।

निकल रहा था यहीं बगल से

जी में आया मिल लूँ तुमसे

व्यस्त हुई दुनिया में ऐसा

करना है दुश्वार।

**********

# नफ़रतों से अब किनारा कर लिया जाये

नफ़रतों से अब किनारा कर लिया जाये
एक मौक़ा दोस्ती को भी दिया जाये |

कब तलक लहरें गिनेंगे बैठ साहिल पर
पैठ कर सागर से मोती चुन लिया जाये |

दूसरों को ही बदलने में रहे मशगूल
अपने हुलिए में भी संशोधन किया जाये |

चार दिन को घूमने आए यहाँ 'आलोक'
प्रकृति के आतिथ्य का आदर किया जाये |

**********

**प्रतिमा सिंह, सिंगापुर**

गोरखपुर में जन्मीं प्रतिमा सिंह अर्थशास्त्र में परास्नातक हैं और भारत में इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ा चुकी हैं| वर्तमान में सिंगापुर के हिंदी सोसाइटी संस्थान में हिंदी अध्यापिका के रूप में कार्यरत प्रतिमा सिंह की अध्यात्म और काव्य-लेखन में विशेष रुचि है| वे सिंगापुर में हिंदी से सम्बंधित भिन्न आयोजनों में अपना सहयोग भी देती हैं|

**संपर्क -** pratimasing@gmail.com

# सत्य या भ्रम

भ्रम है, कि सूरज उगने से, चला जाता है अंधेरा
आँखे मूंद सोते रहने वालों के लिए, कहाँ होता है सवेरा
देखने के लिए सूरज की रोशनी,
खोलनी पड़ती हैं अपनी आँखें,
बंद आँखों के भीतर तो,
पलती हैं सिर्फ अँधेरी रातें !

भ्रम है कि वर्षा होने से तर जाती है धरती,
यदि छेद है अपने पात्र में, तो कहाँ है वो भरती।
पाने के लिए वर्षा का आशीष,
बनाना पड़ता है स्वयं को सोखता कागज़
अनवशोषी हृदय के भीतर तो
बढ़ता है बस सूखा परागज।

भ्रम है कि पुष्प खिलने से, फैलता है चहुँ ओर सुवास,
कैसे जाए भीतर सुगंध, जब बंद हो, खिड़कियों संग संपूर्ण आवास!
पाने के लिए, सुमन की सुरभि
खोलने पड़ते हैं मन के द्वार,
बंद अंध कोठर के भीतर तो,
पनपती सिर्फ दुर्गंध अपार!

भ्रम है कि उस देने वाले से, मिलता है सबको,
कैसे मिले उसको, पात्र अधोमुख पड़ा हो जिसको,
पाने के लिए उस महा शक्ति की अनुकंपा,
तराशनी पड़ती है स्वयं की पात्रता,
छिद्र युक्त पात्र से तो,
रिसती जाती सारी समग्रता!!!

***********

**डॉ. प्रतिभा गर्ग, भारत**

स्वतन्त्र लेखन और शिक्षण से जुड़ी डॉ प्रतिभा गर्ग की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं| गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लेखन के साथ ही सम्पादन में सहयोग भी देती रहती हैं| इनको कई सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है|

**संपर्क -** garg.pratibha@gmail.com

# यूँ बेसबब किसी से अदावत नहीं रही

मुझको कभी किसी से शिकायत नहीं रही।
यूँ बेसबब किसी से अदावत नहीं रही॥

लगने लगे हैं दिल यूँ खिलौने मिज़ाज के।
अब तो दिलों में सच्ची  मुहब्बत नहीं रही॥

मंज़ूर ही नहीं है उन्हें देखना मुझे।
शायद मेरी अब उनको ज़रूरत नहीं रही॥

गुज़री यहाँ पे ज़िंदगी हर रोज़ हारते।
उसको तो जीतने की अब आदत नहीं रही॥

नेकी की बात आज के इस दौर में कहाँ।
अब तो शरीफ़ों में भी शराफ़त नहीं रही॥

मतलब फ़रोश लोग ही मिलते हैं अब यहाँ।
लोगों को अपनों से ही क़राबत नहीं रही॥

'प्रतिभा' हुई तबाह मुहब्बत में इस क़दर।
दिल में किसी भी चीज़ की चाहत नहीं रही॥

***********

**अनुसूया साहू , सिंगापुर**

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में जन्मीं अनुसूया साहू सिंगापुर की हिंदी सोसायटी संस्था में शिक्षिका के तौर पर पिछले दस वर्षों से कार्यरत हैं। कविता लेखन में सक्रिय अनुसूया साहू को भारत की एक संस्था द्वारा साहित्य सम्मान से नवाज़ा गया है|

**संपर्क -** anusuyasahu@gmail.com

# *बताओ वो भगवान कहाँ है?*

हर मानव के मन की हलचल,
धर्म जाति रंग भेद का कलरव,
समानता का भाव कहाँ है,
जिसने यह संसार रचा बताओ वो भगवान कहाँ है?

हवा ने बांधी डोर सभी की,
अग्नि ने जीवन सरल बनाया है,
धरा ने थामें पैर तुम्हारे,
गगन ने सिर सहलाया है।

नीर बिना ना जीवन,
धीर बिना ना जीवन,
ज्ञान बिना सूखा संगम,
धर्म बिना अव्यवस्थित है मन,

समझ गये जो लीला उसकी,
वे मनु ही वरदानी हैं।
गुण – अवगुण दो राह सयानी,
रख मान गुरु का,
पथ सत्य सदा गुरुवानी है।
फिर शब्द रचें वो ध्यान कहाँ है?
जिसने यह संसार रचा बताओ वो भगवान कहाँ है?

*********

**डॉ. आभा मूँदड़ा  सिंगापुर**
भारत में जन्मी डॉ. आभा मूँदड़ा  लम्बे समय तक सिंगापुर के विभिन्न विद्यालयों में हिंदी शिक्षण का कार्य कर चुकी हैं| विद्यार्थियों द्वारा नाटक के माध्यम से भाषा और संस्कृति सिखाना इनका विशेष गुण है| वर्तमान में स्वतन्त्र शिक्षण और लेखन कर रही हैं|
**संपर्क -** abha73@gmail.com

# *वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !*

रहता नहीं एक जैसा हर समय हमारा मन
बहुरूपदर्शक है रंग-बिरंगी भावनाओं का यह मन
आता है आनंद जब आत्मा से मिलाता है यह मन
वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !

बेवजह भटकता, विचारों में घिरता है यह मन
शांत रूप व स्थिरता से ध्यान में लगता है यह मन
अकल्पनीय बदलाव लाता सकारात्मक विचारों वाला मन
वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !

सपनों को साकार करता खुशियों से मुस्कुराता यह मन
जिज्ञासाओं और आकांक्षों से भरा रहता है यह मन
ज्ञान और विवेक की आभा से संभल सकेगा यह मन
वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !

मानवता से परिपूर्ण हो एवं खुशहाली से ओतप्रोत हो यह मन
सरलता मधुरता एवं स्नेह से प्रसन्न रहे यह मन
हर पल धन्यवाद देता है यह मन
वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !

भावनाओं में बहक जाता है यह मन
सागर से भी गहरा है यह मन
भरोसा टूटने पर टूट जाता है यह मन
ईश्वरीय शक्ति से संभल जाता यह मन
वाह रे मनवा मन वाह रे वाह !

*********

**हेमा कृपलानी , सिंगापुर**

दो दशकों से भी अधिक समय से भारत से बाहर रह रही हेमाकृपलानी सिंगापुर में हिंदी शिक्षण से पिछले कई वर्षों से जुड़ी हैं| वे स्वतंत्र लेखिका, अभिनेत्री एवं कुशल प्रस्तोता भी हैं। देश-विदेश की कई पत्र-पत्रिकाओं में इनके आलेख प्रकाशित हो चुके हैं|

**संपर्क -** hkripalani@hotmail.com

# माँ तुझे सलाम

हर इन्सान कभी-न-कभी, कोई-न-कोई शिकायत करता ही रहता है। मैं भी ऐसी ही हूँ। लेकिन वर्ष 2010 में चीन में काम करने के दौरान मेरी मुलाकात एक ऐसी महिला के साथ हुई जिसने जीवन जीने का मतलब समझा दिया। जीवन को स्वीकारना और आभार मानना ये हम सब जानते तो हैं लेकिन कई बार केवल शब्दों में।

ममता की मूरत, अपने बच्चों के लिए भगवान का रूप जो खुद हर तकलीफ बर्दाश्त कर लेगी बिना एक शब्द कहे लेकिन अपने बच्चों पर कभी कोई आँच न आने देगी ऐसी होती है सबकी माँ। पूर्वी चीन के आनहुई प्रांत के चियुन पहाड़ों पर रहने वाली एक ऐसी माँ की कहानी जो अपने बच्चों के लिए हर रोज़ 4000 सीढ़ियाँ चढ़ती-उतरती हैं।

48 वर्षीय वांग प्रतिदिन 70 किलो से भी ज़्यादा सामान अपने कंधों पर उठाकर पहाड़ों पर ऊपर से नीचे, 2 से 3 चक्कर लगाती हैं, जहाँ एक तरफ का रास्ता 10 किलोमीटर से भी अधिक होता है। चौंकाने वाला सच। उनके मेहनतकश जीवन की शुरूआत हुई 1990 में, जब वांग की शादी हुई। शादी के एक साल बाद उन्होंने एक बेटे को जन्म दिया, जो जन्मजात एल्बनीसम नामक रोग से ग्रसित था और वह लगभग नेत्रहीन था। चीन की परिवार नियोजन-नीति के अनुसार, अगर कोई महिला एक विकलांग बच्चे को जन्म देती है तो वह एक दूसरे बच्चे को जन्म दे सकती है। उसके एक साल बाद वांग ने जुड़वाँ बच्चों, एक लड़का और एक लड़की को जन्म दिया। स्वस्थ, और सुंदर जुड़वाँ बच्चों के आने से परिवार में खुशियाँ फिर लौट आई। लेकिन परिवार पर एक बार फिर दुख का पहाड़ टूट पड़ा और 1994 में उसके पति की मृत्यु हो गई। वांग की दुनिया में अंधेरा ही छा गया। अब उसके ऊपर ज़िम्मेदारी थी तीनों बच्चों के पालन-पोषण की, और घर बनाने के लिए 50,000 रूपए कर्ज लौटाने की। उसके साथ-साथ उसी साल बाढ़ में फसल भी बर्बाद हो गई थी।

बाढ़ के बाद पर्वत पर मंदिर की पुनर्निर्माण-परियोजना शुरू हुई, गाँव में रहने वाले पुरुष, मंदिर के निर्माण में लगने वाली ईंटों और सीमेंट को ले जाने वाले कुली का काम करने लगे। वांग ने कुली बनना चाहा, हालाँकि ज़्यादा ऊँचाई पर चढ़ने के कारण उसकी साँस फूल जाती थी। और उसके पैर भी काँपने लगते थे। लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था, उसे अपने बच्चों का पेट भरने के लिए पैसे कमाने थे। मजबूत इरादों वाली वांग उस क्षेत्र की एकमात्र महिला कुली बन गई। वांग के बुजुर्ग माता-पिता ने उससे पुनर्विवाह का आग्रह किया ताकि उसके जीवन में कठिनाइयों का बोझ कम हो सके। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और अपने बच्चों को खुद अकेले पालने का फैसला लिया। वांग ने कहा उसे 21 अक्तूबर 1994 की सुबह आज भी याद है जब अपने कंधों पर कहारों की तरह सामान बांधकर उसने 'थियाओ फू' यानि कुली का काम करना शुरू किया। आमतौर पर एक आदमी को 50 किलो सामान डंडे पर ढोकर ले जाने के लिए पचास रूपए मिलते थे। वांग ने ज़्यादा पैसे कमाने के लिए 90 किलो सामान ले जाने

## संस्मरण– सिंगापुर से

का फैसला लिया। 4,000 से अधिक सीढ़ियों पर चढ़ना और चट्टानें जो एक सीधी दीवार की तरह खड़ी थी उसके सहारे 10 किलोमीटर की यात्रा करनी थी। उसके लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। उसकी दृढ़ता और शारीरिक क्षमता दोनों का इम्तहान था। पहले तो वांग को लगा कि वह कर लेगी लेकिन आधे रास्ते में ही वह पसीने व थकान के कारण बेहोश होकर चट्टान पर गिर पड़ी। उसे लगा वह यह नहीं कर पाएगी लेकिन जब उसकी आँखों के सामने उसके बच्चे भूखे से रोते हुए दिखाए दिए तो वह फिर उठ खड़ी हुई। 9 घंटों के संघर्ष के बाद उसने अपने पहले दिन का काम पूरा किया। जैसे ही उसने कंधों से माल उतारकर रखा उसके कंधों में चुभन के साथ टीस उठी और भयानक दर्द महसूस किया। पैरों में छाले पड़ गए थे और उनसे खून बह रहा था। लेकिन जब उसने अपने हाथों में अपने पहले दिन की कमाई 90 रूपए देखे तो सारा दर्द भूल गई। अगले दिन सुबह कंधे पर दवाई मलकर वह निकल पड़ी अपने काम पर। धूप हो या बारिश या हो कड़कड़ाती सर्दी, या बर्फबारी। किसी-किसी दिन तो सामान लादे तीन फेरी भी लगाती तो कभी-कभी तो रात को भी काम करती थी क्योंकि कम्पनी रात को काम करने वालों को डबल पैसे देती थी। दस साल बाद 2004 की बात है वांग भारी बोझ लिए पहाड़ों पर चढ़ रही थी। बारिश के कारण सीढ़ियाँ गीली थीं, अचानक से उसका पैर सीढ़ी पर जमी काई पर पड़ा और वह फिसलकर गिर गई। लोगों ने उसे अस्पताल पहुँचाया जहाँ उसके टूटे टखने का इलाज किया गया। एक महीने के बाद वह फिर अपने काम पर वापस आ गई हालाँकि वह पूरी तरह स्वस्थ नहीं थी। लेकिन बच्चों की खातिर उसे काम करना था। धीरे-धीरे परिवार की माली हालत में सुधार होने लगा और दो साल के भीतर धीरे-धीरे उसने कर्ज भी चुका दिया। वांग के बच्चे भी समझ गए थे कि उनकी माँ जो भी कर रही है उनके भले के लिए ही कर रही है। वांग के कंधे डंडों का बोझ सहते-सहते सूज गए। वांग की बेटी अपनी माँ के जख्मों पर मलहम लगाते हुए सिसक-सिसक कर रोती है और पूछती है कि क्यों लोग पहाड़ों पर रहते हैं जिनके कारण मेरी माँ को इतना दर्द सहना पड़ता है। बच्चे अब बड़े हो रहे हैं और स्कूल की छुट्टियों के दौरान छोटे-मोटे काम करके अपनी माँ की मदद करते हैं। वांग की अब बस एक ही तमन्ना है कि उसके बच्चे पढ़-लिखकर अपना जीवन बेहतर बनाए क्योंकि उसे गरीबी के कारण पढ़ने का मौका नहीं मिला। लगातार इतने लंबे समय तक बोझ उठाने के कारण वांग को कई स्वास्थ्य संबंधी तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है। उसे गठिया की तकलीफ है और वह कमर से नीचे झुक नहीं सकती। बारिश के मौसम में तो सोते वक्त, करवट नहीं ले पाती। अब तो पहाड़ों पर सामान ले जाने के लिए केबल बन गई हैं। आज इस बात को बीते 11 साल हो गए हैं, उम्मीद करती हूँ वांग अपने बच्चों के साथ खुश होगी। वांग को याद कर ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं। क़दम क़दम पर नया इम्तिहान होता है, संघर्ष का रास्ता कहाँ आसान होता है, कोशिश किए बिना कभी सुधार नहीं होते, संघर्ष और प्रयत्न कभी बेकार नहीं होते, कड़ी मेहनत से बदलती हैं किस्मत की रेखाएँ, रातों-रात कोई चमत्कार नहीं होते।

अब शिकायत करने से पहले मुझे वांग का चेहरा दिखाई देने लगता है। और एक आवाज़ गूँजती है, स्वयं में संतोष महसूस करने पर ही हमारा मन इस जीवन के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है।

*********

**डॉ राजेश मौर्य**
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र
शासकीय नेहरू महाविद्यालय,
सबलगढ़ जिला मुरैना
**संपर्क -** dr.rajeshmourya@gmail.com

**डॉ दिलीप कटारे**
सहायक प्राध्यापक
राजनीति शास्त्र, शासकीय उत्कृष्ट
महाविद्यालय
मुरैना

# *भारतीय संस्कृति*

**सार:-**किसी भी देश में संस्कृति से अभिप्राय उस देश के लोगों की जीवनशैली अर्थात जीवन जीने के तरीके को, जो कि समाज व देश में सम्मान या प्रशंसा के पात्र बन जाए, संस्कृति कहते हैं जिसमें लोगों की भाषा, रहन-सहन का स्तर, रीति-रिवाज, उत्सव, भोजन, कपड़े पहनने के तरीके, धर्म व पूजा-पाठ आदि शामिल हैं।

भारत संस्कृति की दृष्टि से संपूर्ण दुनिया में अद्वितीय या विशिष्ट है क्योंकि यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में विविधिता के अंश मौजूद हैं अर्थात भाषा, धर्म, समूह, संप्रदाय, उत्सव इत्यादि की दृष्टि से लोग अपना जीवन यापन करते हैं। विभिन्न धर्मों के लोग रहने के बावजूद यहाँ एकता व अखंडता के अंश मौजूद हैं हालाँकि हमारे संविधान में इस बात का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है कि भारतीय संविधान, चाहे वह किसी भी धर्म या संप्रदाय का हो, उसे स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचारों से लेकर धार्मिक अनुष्ठान या पूजा पाठ करने का अधिकार है। वे सभी अधिकार प्राप्त करने का हक रखता है जो सभी हिंदुओं को प्राप्त हैं। इसके साथ ही हमारा हिंदू धर्म, मानव सेवा या मानवतावादी सिद्धांत पर आधारित है। (हिंदू धर्म) सनातन हिंदू धर्म के सिद्धांत के आधार पर विश्व बंधुत्व की संकल्पना को स्वीकार करता है और संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने पर बल देता है। इन सब गुणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति होने के साथ-साथ विशिष्ट या अद्वितीय है और विश्व के लगभग सभी लोग इसका सम्मान भी करते हैं। यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति पर आधारित है। जिसमें हम संस्कृति क्या है? या क्या होती है?, को समझते हुए यह जानने का प्रयास करेंगे कि भारतीय संस्कृति कैसी है? तथा यह किस प्रकार अद्वितीय व विशिष्ट है।

**मुख्य बिंदु:-**संस्कृति, धर्म, रीति रिवाज, भाषा, जीवन शैली

**प्रस्तावना:-**भारत की महिमा का गुणगान करने वाला एक गीत -ये दुनिया एक दुल्हन और भारत माथे की बिंदिया-भारत की समृद्ध, परंपरा, सभ्यता व संस्कृति के क्षेत्र में सटीक प्रतीत होता है। यहाँ दुल्हन का मतलब विश्व के सभी लोग और बिंदिया से अभिप्राय भारतीय लोगों से है। जब हम दुनिया के लोगों पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनके रहन-सहन का स्तर, व्यवहार व जीवन जीने के तरीके आदि सब कुछ भारतीय लोगों की तुलना में भिन्न नज़र आते हैं। अर्थात भारतीय लोगों का व्यवहार, जीवन स्तर व जीवनशैली विशिष्ट विशेषताओं के साथ आदर्श, शिष्टाचार व विनम्रता जैसे गुणों पर आधारित है और यही विशेषता भारतीय संस्कृति को विशिष्ट बनाती है। इसीलिए भारतीय संस्कृति को एक बिंदिया के रूप में दर्शाया गया है।

सामान्य शब्दों में संस्कृति को एक बेहतर जीवन शैली व व्यवहार या कोई भी ऐसा कार्य, जिससे प्रशंसा या सम्मान प्रदान किया जा सके, के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक वेबसाइट

(www.keydifference.com) के अनुसार:-साधारण शब्दों में संस्कृति को लोगों के जीवन जीने के तरीकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें उनका भोजन, भाषा, रहन-सहन का स्तर, कपड़े, उनके द्वारा पालन किए जा रहे धर्म व पूजा-पाठ आदि शामिल हैं।(1) संस्कृति अलग-अलग समुदायों तथा राष्ट्रों में भिन्न-भिन्न पाई जाती है और समय-समय पर यह बदलाव प्रस्तुत करती है।

भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे भिन्न रूप में प्रकट होती है। यह विविधता और विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिश्रण का एक रूप है क्योंकि यहाँ सैकड़ों-हज़ारों वर्षों से कई संस्कृतियों के लोगों का आगमन हुआ था जैसे:-मुस्लिम, रोमन, पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और ब्रिटिश आदि। इसीलिए भारतीय संस्कृति विविधता पूर्ण एवं मूल्यों, आदर्शों तथा विनम्रता से ओतप्रोत अद्वितीय है।

भारतीय संस्कृति हमारे हिंदू धर्म अर्थात सनातन पर आधारित है जो संपूर्ण विश्व में शांति का संदेश देती और वैश्विक स्तर पर एक प्रकार से भाईचारे (विश्व बंधुत्व) के सिद्धांत पर आधारित है। यहाँ अनेक प्रकार के धर्म, भाषा, समूह समुदाय, सभ्यताओं के लोग अपना जीवन यापन करते हैं जो कि भारत को विश्व के अन्य देशों से भिन्न या विशिष्ट बनाता है। कहने का मतलब है कि विभिन्न धर्मों और भाषाओं के लोग होने के बावजूद एकता व अखंडता कायम है तथा शांति पूर्वक अपना जीविकोपार्जन करते हैं। इसीलिए भारतीय संस्कृति को विश्व में सबसे अद्वितीय एवं समृद्ध व सौंदर्य से परिपूर्ण माना गया है।

यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति पर आधारित है जिसमें हम सर्वप्रथम संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा प्रस्तुत करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि भारतीय संस्कृति विश्व के अन्य देशों से किस प्रकार भिन्न या विशिष्ट है।

**संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा**

यदि हम संस्कृति का अर्थ एक पंक्ति में प्रस्तुत करें तो यह एक समूह या समुदाय या राष्ट्र में रहने वाले लोगों के जीवन यापन करने के तरीकों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अर्थात उनका भोजन, रहन-सहन का स्तर, परिधान का स्तर, भाषा, विभिन्न परंपराएँ, प्रथाएँ, रीति रिवाज, त्यौहार या उत्सव, दृष्टिकोण, कला व कौशल एवं क्षमताएँ आदि क्या हैं? और उन्हें किस प्रकार व कौन से तरीके से अंजाम दिया जाता है|

भारतीय परिपेक्ष्य में संस्कृति शब्द की उत्पत्ति को संस्कृत भाषा से माना गया है। संस्कृति को सभ्यता संचालन के संदर्भ में भी देखा जाता है। सभ्यता एक जटिल व व्यापक प्रक्रिया है जो यह स्पष्ट करती है कि व्यक्तियों का एक बड़ा समूह, प्रकृति या वातावरण में कैसे अस्तित्व में आया। दूसरे शब्दों में सभ्यता व्यक्तियों की विकास प्रक्रिया को दर्शाने वाला शब्द है जैसे:-सिंधु घाटी की सभ्यता, मोहनजोदड़ो आदि, ये सभ्यताएँ हमें बताती हैं कि उस समय व्यक्ति कैसे रहते थे और उनका ज्ञान का स्तर व कौशल कैसा था। आज जो सभ्यताएँ शीर्ष स्थिति पर पहुँची हैं, वे सब संस्कृति का ही परिणाम हैं।(3)

भारत के एक महान गुरु सद्गुरु ने भारतीय संस्कृति को भलाई, व्यवस्थित प्रथाओं, अध्यात्मिक, लोकाचार आदि के संदर्भ में स्पष्ट किया है। उन्होंने पश्चिमी संस्कृति का हवाला देते हुए कहा कि भले ही पाश्चात्य संस्कृति व्यक्तियों को राजनैतिक दृष्टि से स्वतंत्रता प्रदान करें, परंतु इसमें (पाश्चात्य) संस्कृति में लोगों की मुक्ति के लिए कोई भी प्रावधान नहीं है जबकि भारतीय संस्कृति पालन-पोषण के साथ-साथ मुक्ति की बात करती है यहाँ मुक्ति का मतलब लोगों द्वारा अपने संपूर्ण जीवन में समूह या समाज या राष्ट्र में भलाई या कल्याण के लिए कार्य करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो

जाना है।

विश्व के विभिन्न शिक्षाविदों तथा सामाजिक आर्थिक दार्शनिकों ने संस्कृति की परिभाषा को इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

ई.बी.टेलर के अनुसार-संस्कृति एक जटिल संपूर्णता है। जिसमें विश्वास, ज्ञान, कानून, नैतिकता, कला, प्रथा और मनुष्य द्वारा समाज में रहते हुए अर्जित की गई क्षमताएँ आदतें आदि शामिल हैं।(5)

डी.मत्सुमो (1996) के अनुसार-किसी भी समूह, समाज या देश में संस्कृति लोगों द्वारा साझा किए गए विचार, नजरिये, विश्वासों, मूल्यों और व्यवहारों का समूह है। लेकिन जब संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित की जाती है तो यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग बन जाती है।(6)

जे.बी.पी.सिन्हा (2004) के अनुसार-संस्कृति लोगों के मूल्यों, मानदंडों, विश्वासों को सुदृढ़ करके निरंतरता बनाए रखने के लिए समाज को सक्षम बनाती है।(7)

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी भी समाज या देश में लोगों के व्यवहार, कौशल, कला, मूल्य, रीति-रिवाजों, भाषा, नैतिकता, भोजन, रहन-सहन का स्तर इत्यादि ही संस्कृति है और व्यक्ति जीवन भर इन्हीं तत्वों का उपयोग करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

**संस्कृति के प्रकार**

समाजशास्त्रियों तथा मानवशास्त्रियों ने दो प्रकार की संस्कृतियों का उल्लेख किया है।

**(A)भौतिक संस्कृति**

सामान्य शब्दों में भौतिक का मतलब होता है किसी भी चीज़ या वस्तु का मूर्त रूप होना अर्थात जिसका कोई रूप रंग हो या हमें दिखाई दे। संस्कृति के ये सभी पहलू या घटक समूह या समाज या एक राष्ट्र में रहने वाले सदस्यों, व्यक्तियों के व्यवहार और उनकी सोच या धारणाओं को परिभाषित करते हैं तथा बताते हैं कि भारतीय लोग इन सभी व्यवस्थाओं के बावजूद एक साथ भाई चारे या विश्व बंधुत्व की धारणा के आधार पर अपना जीवन यापन करते हैं। यही कारण है कि आधुनिक समय में भारतीयों ने एक नई तकनीक जो कि भौतिक संस्कृति का एक रूप है, सूचना व संचार प्रौद्योगिकी कहा जाता है। भारतीय छात्र, छात्राओं ने अपने कैरियर (रोजगार) को ध्यान में रखते हुए कंप्यूटर, स्मार्टफोन, इंटरनेट आदि का उपयोग करना आरंभ कर दिया है जो कि भारत के संदर्भ में एक विशिष्ट भौतिक संस्कृति को दर्शाता है।(8)

**(B)गैर भौतिक संस्कृति**

जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है गैर-भौतिक अर्थात अदृश्य या जो दिखाई न दे। इसमें हमारे मूल्य, विश्वास, नैतिकता, सामाजिक नियम, मानदंड और आध्यात्मिक विचार आदि शामिल हैं| संस्कृति का यह पहलू हमें तब स्पष्ट होता है जब व्यक्ति का व्यवहार या बातचीत का तरीका इत्यादि के बारे में पता चलता है।

संस्कृति का यह प्रकार न केवल मनुष्य के व्यवहार या बातचीत से जुड़ा हुआ है बल्कि धर्म से भी जुड़ा हुआ है। धर्म की गैर-भौतिक संस्कृति में भगवान या ईश्वर की पूजा, अर्चना, विश्वास, श्रद्धा आदि को दर्शाता है और बताती है कि कोई व्यक्ति भगवान या ईश्वर में कितनी श्रद्धा रखता है?(9) समाजशास्त्री यह भी कहते हैं कि व्यक्तियों की धार्मिक मुद्दों से संबंधित संस्कृति, धार्मिक संकेतों, प्रतीकों, भाषा, मूल्यों या मानदंडों से जागृत होती है।

भारत के संदर्भ में धार्मिक संस्कृति का अपना एक महत्व है क्योंकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जो सभी को अपने-अपने

धर्मों को मानने, स्वीकार करने तथा पूजा पाठ की स्वतंत्रता प्रदान करता है। भारत की यही पहचान देश को धर्म के क्षेत्र में एक विशिष्ट संस्कृति का दर्जा देती है।

उपरोक्त संस्कृति के प्रकारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे देश में यह दोनों प्रकार सटीक रूप से संचालित रहते हैं और सभी भारतीय इसी प्रकार से अपना जीवन यापन करते हैं।

**भारतीय संस्कृति**

एशिया महाद्वीप के दक्षिणी प्रायद्वीप में स्थित भारत सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों व सभ्यताओं में जाना जाता है। यह (भारतीय) संस्कृति लगभग 5000 वर्ष पुरानी है।(10) जिसने भारतीय लोगों को एक समृद्ध, सांस्कृतिक विरासत प्रदान की है जो कि स्वदेशी सिद्धांतों पर आधारित रही है, इसमें परिवर्तन तभी हुआ जब लोगों ने बाहरी संस्कृति (पाश्चात्य) से संपर्क किया|
भारतीय संस्कृति को समझने के लिए मैंने संस्कृति के निम्न पहलू जैसे भौगोलिक, जीवनशैली, भाषाएँ, धार्मिक, रीति-रिवाज, सामाजिक संरचना तथा आध्यात्मिकता आदि के आधार पर समझाने का प्रयास किया है।

भारत भौगोलिक दृष्टि से काफ़ी समृद्ध स्थिति में है। यह विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ तथा जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है जहाँ एक तरफ समुद्र के रूप में पानी का विशाल भंडार है तो दूसरी तरफ थार (रेगिस्तान) भी विशाल पैमाने पर उपलब्ध है। भारत की सीमा पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व-पश्चिम बंगाल की खाड़ी को स्पर्श करती है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत श्रृंखला तथा दक्षिण में कन्याकुमारी, जहाँ तीनों समुद्र मिलते हैं, से घिरा हुआ है। इस देश की भूमि सीमा 15200 किलोमीटर तथा समुद्री तट रेखा 6100 किलोमीटर है।(11) समुद्री तट रेखा की सबसे अधिक सीमा गुजरात राज्य में स्थित है। यहाँ कृषि कार्य के लिए सक्षम भूमि क्षेत्रफल, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ को छोड़कर सबसे अधिक मात्रा में उपलब्ध है। भारत में कुल 29 राज्य तथा 7 केंद्र शासित प्रदेश है।(12) यह देश इतनी अधिक भौगोलिक विविधता होने के बावजूद कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी लोगों को एक साथ एकता के सूत्र में बांधे रखता है।
भारतीय लोगों की जीवनशैली भी दुनिया में अद्वितीय है। यहाँ के लोगों का व्यवहार तथा जीवन जीने का तरीका विशिष्ट है क्योंकि यहाँअधिकांश लोग हिंदू धर्म को मानने वाले हैं जो कि सनातन, हिंदू धर्म अर्थात शांति एवं विश्व बंधुत्व की अवधारणा पर आधारित है। यह सभी को एक समान सम्मान तथा दर्जा देने की बात करता है। यहाँ के लोगों को इस विशिष्ट संस्कृति (सनातन, विश्व बंधुत्व) का पहलू भारतीय प्राचीन वेदों, धर्मशास्त्रों तथा धर्मग्रंथों से प्राप्त हुआ था।(13) भारत में प्राचीन काल में वेदों के माध्यम से जो शिक्षा प्रदान की जाती थी तो उसे वैदिक शिक्षा कहा जाता था। इसी वैदिक शिक्षा में भारतीयों को अपने मूल्यों को विकसित करने तथा दूसरों के प्रति सहिष्णु होना सिखाया था जो कि आज तक कायम है|(14) इसीलिए भारतीयों की जीवन शैली या जीवन जीने का तरीका सबसे विशिष्ट है।

भारत विविध भाषा-भाषियों का घर है। अर्थात संपूर्ण विश्व में भारत विशिष्ट देश है जहाँ कई भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं। ये भाषाएँ केवल बोलने वालों के लिए नहीं हैं बल्कि संपर्क भाषाएँ हैं जो देश में विभिन्न भौगोलिक (क्षेत्र, पर्वत, पहाणी क्षेत्र) विविधता के कारण उत्पन्न हुई हैं। आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि-भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा 74% इंडो-आर्यन भाषा, जिससे हिंदी भाषा निकली है, बोली जाती है। इसके बाद द्रविड़ 24%, विशेष रूप में दक्षिण भारत में, ऑस्ट्रिक 1.4 प्रतिशत, चीन-तिब्बती 0.9% लोगों द्वारा बोली जाती है।(15)
इसके अलावा डोंगरी, मैथिली, गढ़वाली, कुमायूं, सिंधी,

राजस्थानी, बुंदेली, कोंकणी, ब्रजभाषा, भोजपुरी इत्यादि भी बोली जाती है। यही कारण है कि भारत की अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है लेकिन जब भाषा और संस्कृति को एक दृष्टिकोण से देखते हैं तो दोनों आपस में एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। जब कोई व्यक्ति किसी एक समूह या समुदाय या संस्था से जुड़ता है तो उसे उस समूह के रीति-रिवाजों, उत्सवों से लेकर भाषा को भी स्वीकार करना पड़ता है जिससे भाषा उस व्यक्ति के लिए समूह या समुदाय की एक संस्कृति बन जाती है और वह अपना संपूर्ण जीवन इसी विशिष्ट भाषा के कारण संस्कृति में व्यतीत करता है। कुछ समाज शास्त्रियों तथा शिक्षाविदों का कहना है कि जब कोई व्यक्ति किसी समूह या समुदाय में शामिल होता है तो वह भाषा के साथ-साथ प्रथाओं, परंपराओं, उस समूह या समुदाय के विशिष्ट विचारों को भी सीखता है जो कि बाद में उसके लिए एक संस्कृति बन जाती है और वह अपना संपूर्ण जीवन इसी विशिष्ट भाषा के कारण संस्कृति में व्यतीत करता है। रोसी लेंडी (1973) के अनुसार-किसी समूह या समुदाय में बातों का आदान-प्रदान करने के लिए जो भाषा बोली जाती है, वह एक प्रकार से भाषण समुदाय का गठन करती है जो बाद में पूरा समाज इसी भाषा के माध्यम से बातों को समझता है तथा जो बाद में भाषा की दृष्टि से एक विशेष उप संस्कृति बन जाती है।(16) भारत में इतनी अधिक भाषाएँ या समूह व समुदाय होने के बावजूद लगभग सभी भारतीय समुदाय के लोग एकता व अखंडता के सूत्र में बंधे हुए हैं जो भारत को भाषाओं की दृष्टि से एक विशिष्ट देश या संस्कृति का दर्जा देता है।

भारत धार्मिक दृष्टि से विश्व के अन्य देशों की तुलना में विशिष्ट है। यहां हिंदू के अलावा मुस्लिम, बौद्ध, जैन, सिख, इसाई आदि धर्मों के लोग अपना जीवन यापन करते हैं। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि यहाँ (भारत) हिंदुओं और मुसलमानों की कुल आबादी 94% है जबकि अन्य धर्मों के लोगों का हिस्सा लगभग 6% है जिनमें से 1.79% सिख, बौद्ध 0.74%, जैन 0.5% और थोड़ी बहुत संख्या में पारसी धर्म के लोग शामिल हैं।(17) देश में विभिन्न धर्मों के लोगों की उपस्थिति के बावजूद सभी लोग किसी भी धर्म में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। अर्थात सभी लोग स्वतंत्रता पूर्वक अपने अपने धार्मिक अनुष्ठान का पालन करते हैं। इसके लिए हमारे संविधान में भी सभी धर्मों के लोगों की भलाई के लिए धर्मनिरपेक्षता, समानता, स्वतंत्रता, गणतंत्र वाद संघवाद, सामाजिक न्याय तथा व्यस्क मताधिकार आदि का प्रावधान रखा है।(18) देश में हिंदू धर्म के लोगों की सर्वाधिक संख्या होने के बावजूद सभी धर्मों का सम्मान करते हैं क्योंकि हिंदू धर्म, सहनशीलता, मानव सेवा,मानव जाति का कल्याण आदि गुणों पर आधारित है। मनीष कुमार (2018) ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि-हिंदू धर्म ने लोगों को कई परिवर्तनों का सामना करने तथा जीवन जीने के लिए सशक्त बनाया है।(19)

भारतीय लोगों के रीति-रिवाज तथा उत्सव भी अपनी सांस्कृतिक विविधता के नाम से विख्यात हैं। विभिन्न धर्मों के लोगों के कारण यहाँ लगभग सभी रीति-रिवाजों, उत्सवों को स्वीकार किया जाता है। दिवाली, दशहरा, होली, रक्षाबंधन, ईद, बकरीद, नवरात्रि जैसे उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं।

भारतीय लोगों के रीति रिवाज नए प्रभावों को अवशोषित करने के साथ-साथ पवित्रता में निहित हैं। यहाँ के लोग एक तरफ तो गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा आदि नदियों को पवित्र मानते हैं तो दूसरी तरफ पेड़ जैसे:-पीपल, बरगद के अलावा हल, बैल,

हथियारों को पवित्र मानते हुए उनकी पूजा करते हैं।(20)

संपूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश रहा है जिसने व्यंजनों को स्वादिष्ट बनाने के लिए विभिन्न मसालों की खोज की थी, जिसके प्रमाण इतिहास में दर्ज हैं।

भारत में प्राचीन मंदिर, किले तथा ऐतिहासिक इमारतें आदि भी सांस्कृतिक दृष्टि से अहम हैं या हम यह कह सकते हैं कि संपूर्ण दुनिया में भारतीय शिल्प कला तथा मूर्तिकला, खूबसूरत शिल्पकरी या कारीगरी का बेजोड़ नमूने हैं जो विदेशी पर्यटकों को यात्रा या देखने के लिए आकर्षित करते हैं|

**निष्कर्ष**

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संपूर्ण विश्व में भारत ऐसा देश है जो विविधताओं, विभिन्नताओं के नाम से जाना जाता है। विभिन्न धर्म, भाषाएँ या बोलियाँ, सभ्यताएँ, रीति-रिवाज, परंपराएँ, प्रथाएँ धार्मिक मान्यताएँ होने के बावजूद यहाँ के लोग एकता व अखंडता के साथ अपना जीवन यापन करते हैं। इस दृष्टि से इसे (भारत) विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण भी कहा जाता है।

**********

**Reference**


1.Difference between Culture and Civilization, https://keydifference.com/difference-between-culture-and-civilization.html , 13 Jan. 2018.

2.IBID.

3.Culture and Civilization., https://unacademy.com/content/nda/study-material/indian-history/culture-and-civilization.

4.Indian Culture and Tradition:-The Basis Behind Its Elements., www.isha.sadhguru.org, 8 February 2014.

5. https://pediaa.com/difference-between-culture-and-civilization.

6.D. Matsumo, Culture and Psychology, (pacific grove, CA:-Brooks Colen), 1996, P.16.

7.Sinha, J.B.P. (2004) Multinationals in India:-Managing the Interface of Culture., New Delhi:-SAGE.

8.Dr.Arya J.P. (2019) Cultural Identity of India:-socio-legal Aspects., Commonwealth Law Review Journal-Annual Vol.5., Creative Connect International Publishers, 2019, pp. 345-383.

9.IBID.

10.Kumar, M. (Jan-Jun, 2018), Essential Characteristics of Indian Culture, Sculpture and Architecture., International Journal of Movement Education and Social Science, Vol.7, Special Issue 02, January-June 2018.

11.Srivastava, S. (2015) A study of awareness of cultural heritage Among the teacher at university level., Universal Journal of Educational Research, 3(5), 336-344, 2015.

12.Importance of Indian Culture., http://www.shivom.org/importance-of-Indian-culture-/?amp=1

13.16 Unique Culture of India:-Customs and Indian Traditions., https://www.holidify.com/pages/indian-culture-and-traditions-1331.html

14.Role of Indian culture in Calculating values., (www.gktoday.in) 15 Aug. 2016.

15.To See The Reference Number (11).

16.Mrs.Kalpana, C. (2019) Culture and Language in India., International General for Research Engineering Applications and Management, Vol.5, issue 08, November 2019.

17.To See The Reference Number (11).

18.Arnold,Matthew (1946) Culture and Anarchy, Cambridge University Press.

19.To See The Reference Number (10).

20.To See The Reference Number (11).

**अकारी मोरी**
**छात्रा -** नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर

# चिउने सुगिहारा

चिउने सुगिहारा एक जापानी व्यक्ति हैं जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 6000 से अधिक यहूदी शरणार्थियों की जान बचाई थी। वे कई लोगों के लिए एक नायक हैं, लेकिन 44 साल तक उनकी प्रशंसा नहीं हुई। इस लेख में मैं समझाऊँगी कि वे कौन थे, उन्होंने क्या किया और उनका सम्मान कैसे बहाल किया गया।

सुगिहारा 1900 में गिफू नामक शहर में पैदा हुए थे। उनका सपना  अंग्रेज़ी अध्यापक बनने का था। लेकिन उनके परिवार के पास ज़्यादा पैसा नहीं था। इस कारण उन्होंने एक राजनयिक बनने के लिए विदेश मंत्रालय की छात्रवृत्ति परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने रूस के हार्बिन में अपना काम शुरू किया। 1939 में सुगिहारा कौनास, लिथुआनिया में जापानी वाणिज्य दूतावास के उप वाणिज्य दूत बने।

यह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान था और 1940 में नाज़ियों ने पोलैंड पर अपना आक्रमण शुरू किया। कई पोलिश यहूदी प्रलन से बचने के लिए देश से भाग गए। उनमें से कई लिथुआनिया भाग गए, जो हाल ही में पोलैंड से स्वतंत्र हुआ था। लेकिन सोवियत सेना के कब्ज़े के कारण, यहूदियों को फिर से बाहर निकलना पड़ा।

18 जुलाई 1940 से कई शरणार्थी वीज़ा की माँग को लेकर दूतावास गए। इसलिए सुगिहारा ने शरणार्थियों के लिए जापान का वीज़ा जारी करना शुरू किया। हालाँकि वीज़ा जारी करने के सख्त नियम थे। सबसे पहले व्यक्ति को शरणार्थी देश से प्रवेश परमिट की आवश्यकता थी। और कई इन मानदंडों को पूरा नहीं करते थे। सुगिहारा के वीज़ा जारी करने के अनुरोध को विदेश मंत्रालय ने मना कर दिया। फिर भी सुगिहारा ने हार नहीं मानी। उन्होंने आदेश के खिलाफ़ जाने का फैसला किया और यहूदी शरणार्थियों का वीज़ा जारी रखा। कहा जाता है कि उनके वीज़ा ने 6000 से ज़्यादा लोगों की जान बचाई थी। लेकिन 1947 में जापान लौटने के बाद उन्हें विदेश मंत्रालय से इस्तीफा देने के लिए कहा गया।

कई वर्षों बाद 1974 में उनकी मेहनत को आखिरकार पहचान मिली और उन्हें "यद वागेम" पुरस्कार मिला, जो गैर यहूदियों को दिया जाता है जिन्होंने यहूदी समुदाय के लिए योगदान दिया हो। इसके अलावा 10 अक्टूबर 2000 को सुगिहारा का सम्मान विदेश मंत्रालय द्वारा बहाल किया गया।

आज तक लिथुआनिया में उस सड़क का नाम जहाँ जापानी दूतावास था "सुगिहारा गली" है। सुगिहारा के गृहनगर गिफू में एक स्मारक संग्रहालय है। मुझे उम्मीद है कि बहुत से लोग लंबे समय तक उनका नाम याद रखेंगे।

************

आपके विचार और प्रतिक्रियाएँ  सादर आमंत्रित हैं:

sangam.singapore@gmail.com